اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ

अल्लाह उन लोगों का मित्र है जो ईमान लाते हैं। वह उन्हें अन्धेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लाता है। (अल् बक़रः-258)

मासिक पत्रिका

राह-ए-ईमान

सुलह (हिजरी शम्सी) जनवरी 2016 ई०

जलसा सालाना

कादियान

2015

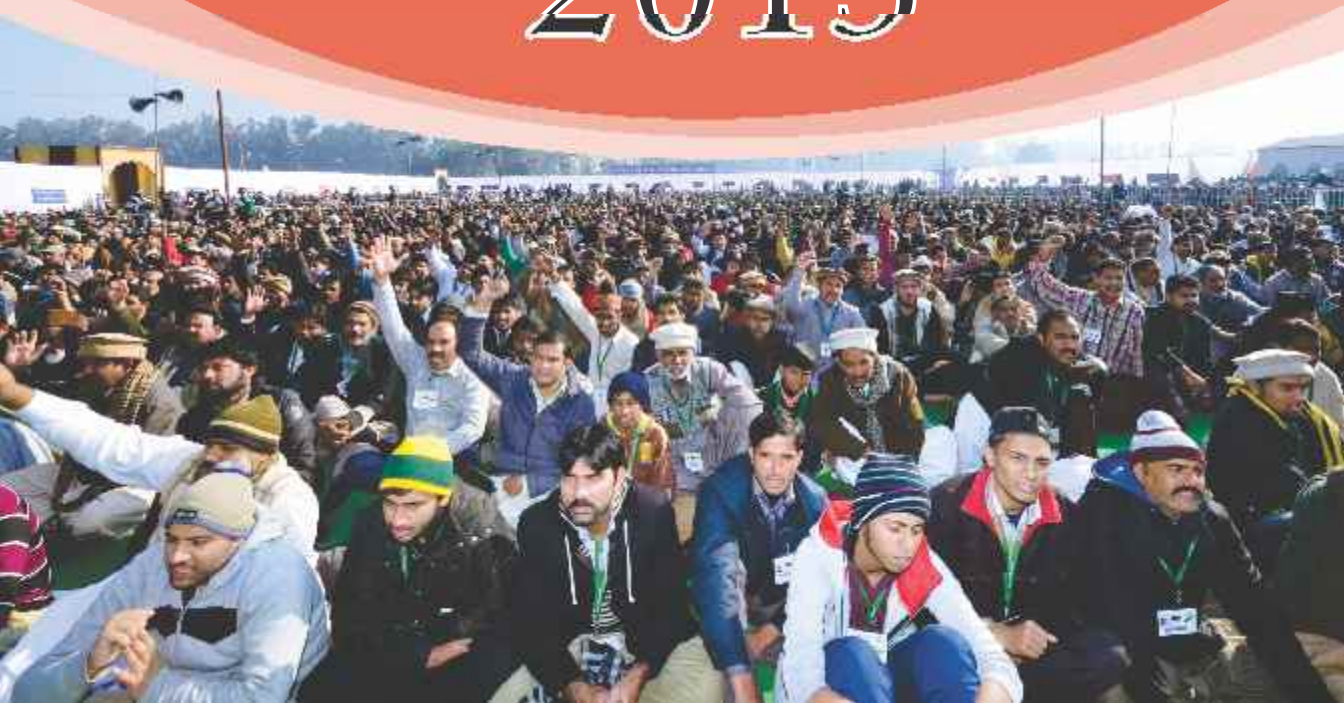

जलसा सालाना में सम्बोधन करने वाले व्यक्ताओं का सामूहिक दृश्य।

मौलाना जलालुद्दीन साहिब नय्यर(सदर सदर अंजुमन अहमदिय्या)
जलसा सालाना के कार्यों के निरिक्षण पर कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए।

मौलाना जलालुद्दीन साहिब नय्यर(सदर सदर अंजुमन अहमदिय्या)
जलसा सालाना के प्रारम्भ में लिवा-ए-अह्मदियत फेराते हुए।

मौलाना जलालुद्दीन साहिब नय्यर(सदर सदर अंजुमन अहमदिय्या)
जलसा सालाना में उपस्थित गण को सम्बोधित करते हुए।

मौलवी नुरुद्दीन साहिब पवित्र कुरान मजीद
की आयात की तिलावत करते हुए।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -18
Issue - 1

राह-ए-ईमान

जनवरी
2016

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूचि

पृ.

1. पवित्र क़ुरआन.....2
2. हदीस शरीफ.....3
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.....4
4. सम्पादकीय.....5
5. सारांश ख़ुत्बा जुम्अः 25 दिसम्बर 2015 ई.....9
6. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो का पवित्र जीवन भाग(26).....11
7. दुनिया में शान्ति स्थापना के लिए इस्लाम की शिक्षा.....16
8. लाहे-अमल भाग -(4).....22
9. गुलदस्ता.....28
10. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक कहानी.....29
11 नेकी का बदला.....30
12 थोड़ा हंस लें.....31
11 क्या आप जानते हैं ?.....32

***

सम्पादक
शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री

उप सम्पादक
मुहम्मद नसीरुल हक आचार्य
फारूक अहमद सैफी

टाइप सेटिंग
आसमा तय्यबा

टाइटल डिज़ाइन
आर महमूद अब्दुल्लाह

मैनेजर
नवीद अहमद फ़ज़ल

कार्यालय प्रभार
सय्यद रशीद अहमद शमीम,
मुहम्मद असलम

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिय्या भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य : 150 रुपये

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor SK. Mujahid Ahmad

पवित्र क़ुरआन

और उस ने तुम्हारे लिए जो विभिन्न प्रकार की वस्तुएं ज़मीन पर पैदा की हैं(वो सब तुम्हारे लिए सेवा कर रही हैं) इस में नसीहत हासिल करने वालों के लिए बड़ा निशान है।(सूरह अन्नहल आयत 14)

व्याख्या

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो इस आयत की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं " इस आयत से एक नए विषय को आरम्भ किया गया है और रंगों की विभिन्नता को पेश किया है और यह कि वे भी प्रभाव रखते हैं और इंसान उन से भी लाभ उठाता है पवित्र कुरआन कैसा अद्भुत कलाम है जो इस भेद से भरी हुई बातों को उस ज़माने में बताता है जब कि संसार इस से बिल्कुल अरचित था और रंगों के प्रभाव से आश्चर्य जनक सहायता मिली है और रंगों के प्रभाव से ही बीमारियों का इलाज में सहायता मिली है। अर्थात् विभिन्न रंगों की बोतलों में पानी रख कर सूर्य की किरणों को सामने रख कर ख़ाली पानी को दवा के रूप में बदल दिया जाता है हालांकि यह तरीका अभी ज्ञान की पूर्ण सीमा तक नहीं पहुंचा है लेकिन इस के कुछ लाभ ऐसे हैं जिस से इंकार नहीं किया जा सकता। इस के अतिरिक्त यह बात भी प्रमाणित हो चुकी है कि एक ही प्रकार की वस्तुएं रंग की विभिन्नता के कारण विभिन्न प्रभाव रखती हैं उदाहरण के लिए तूत है इस में से सफेद तूत गले में खारिश पैदा करता है और काला तूत गले में घुटन की बीमारी में लाभ दायक होता है। संदल(चंदन) सफेद लाल रंग का अलग प्रभाव देता है।अर्थात एक और बहुत समानता है और दूसरी ओर बहुत विभिन्नता है। यही अवस्था जड़ी बूटियों की है। सभी आमों के पेड़ आम ही के पेड़ हैं परन्तु सभी पेड़ दूसरे से अलग पहचाने जाते हैं और ऐसा ही अन्तर उन के फलों में है अर्थात् संसार में प्रत्येक पदार्थ दूसरे पदार्थों से समानता रखते हैं परन्तु फिर भी उन से विभिन्नता पाई जाती है। अगर यह अन्तर न होता तो एक को दूसरे से पहचनाना मुशकिल हो जाता अब तो प्रत्येक मां बाप अपने बच्चे को प्रत्येक बच्चा अपने मां बाप को प्रत्येक पति पत्नी को, प्रत्येक पत्नी पति को, भाई भाई को पहचानता है अगर यह अनेकता के निशान न होते तो पहचानना कठिन हो जाता। परन्तु अल्लाह तआला ने किस प्रकार एक स्पष्ट अन्तर वस्तुओं में रखा है। सफेद रंग है तो उस की इतनी श्रेणियां हैं कि उन की गिनती नहीं की जी सकती। केवल आंख उस के अन्तर को पहचानती है और इस पहचान के कारण शीघ्र ही वस्तुओं की पहचान कर लेती है।

(तफ़सीर क़बीर)

☆ ☆ ☆

हदीस शरीफ़

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन

मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि -

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी आँखों की ठंडक नमाज़ में है।

(सुनन निसाई किताब इश्रतुन्निसाअ बाब हुब्बन निसाए)

हज़रत अबू हुरैरा (र) बयान करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया - क़यामत के दिन सर्वप्रथम जिस चीज़ का लोगों से हिसाब लिया जायेगा वह नमाज़ है। अगर यह हिसाब ठीक रहा तो वह कामयाब हो गया और उसने निजात (मुक्ति) पा ली। अगर यह हिसाब ख़राब हुआ तो वह नाकाम हो गया और घाटे में रहा। अगर उसके फ़र्ज़ों (अर्थात् वह इबादतें जिन्हें खुदा ने अनिवार्य ठहराया है) में कोई कमी हुई तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा कि देखो मेरे बन्दे के कुछ नफ़िल (जो अनिवार्य इबादतों के अतिरिक्त की जाती हैं) भी हैं । अगर नफ़िल हुए तो फ़र्ज़ों की कमी उन नफ़िलों से पूरी कर दी जायेगी। इसी तरह उसके शेष कर्मों का परीक्षण होगा और उनका जायज़ा लिया जायेगा।

(सुनन् तिर्मिज़ी किताबुस्सलात भाग इन्ना अव्वला मा यूहासिबो बेहिल अब्दो)

हज़रत अबू हुरैरा(र) वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते हुए सुना, क्या तुम समझते हो कि अगर किसी के दरवाज़े के सामने से नहर बह रही हो और वह उसमें प्रतिदिन पाँच बार नहाए तो उसके शरीर पर कोई मैल रह जायेगी ? सहाबा(र) ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! कोई मैल नहीं रहेगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया यही मिसाल पाँच नमाज़ों की है। अल्लाह तआला इनके द्वारा गुनाह (पाप) माफ़ करता है। और कमज़ोरियाँ दूर कर देता है।

(सहीह बुखारी किताब मवाकीतुस्सलात भाग अस्सलातुल ख़मसो क़फ़्फ़ारा लिलख़ताए)

☆ ☆ ☆

रूहानी ख़ज़ायन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

नमाज़ों में बहुत दुआ करो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फर्माते हैं :-

"नमाज़ों में बहुत दुआ करो ताकि अल्लाह तुम्हें अपनी तरफ खींचे और तुम्हारे दिलों को साफ करे क्योंकि आदमी कमज़ोर है। प्रत्येक बुराई जो ख़त्म होती है वह ख़ुदा तआला की ताकत से ही ख़त्म होती है और जब तक आदमी ख़ुदा से ताकत हासिल न करे किसी बुराई को समाप्त करने की शक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। इस्लाम केवल यह नहीं कि रस्म की तरह अपने आप को कलमा कहने वाले बनाओ बल्कि इस्लाम की सत्यता यह है कि तुम्हारी रूहें ख़ुदा तआला के द्वार पर गिर जाएँ और ख़ुदा के आदेश तुम्हें सम्पूर्ण संसार से प्यारे लगने लगें... हे मेरी जमाअत ! नि:संदेह समझो कि समय अपने अंत पर आ गया है और एक स्पष्ट परिवर्तन प्रकट हो गया है अत: अपने जीवन को धोखा मत दो और अतिशीघ्र अच्छाई में परिपूर्ण हो जाओ... पवित्र क़ुरआन को अपना मार्गदर्शक बनाओ और प्रत्येक बात में इस से नूर (शिक्षा) प्राप्त करो और हदीसों को भी रद्दी की तरह न समझो कि हदीसें बहुत उपयोगी पुस्तकें हैं और कड़े परिश्रम से उन्हें इकट्ठा किया गया है। लेकिन जब क़ुरआन की शिक्षा के विरुद्ध हदीस का कथन हो तो हदीस को छोड़ दो ताकि तुम्हारा पथभ्रष्ट न हो।

पवित्र क़ुरआन को बड़ी सुरक्षा से अल्लाह तआला ने तुम तक पहुँचाया है। अत: तुम इस पवित्र पुस्तक की प्रतिष्ठा करो। इस पर किसी को प्राथमिकता न दो सारी सच्चाई रखना और सच्चाई इसी पर आधारित है। किसी व्यक्ति की बातें लोगों के दिलों में उसी सीमा तक प्रभावित करती है जिस सीमा तक उस व्यक्ति के ज्ञान व संयम पर लोगों को विश्वास होता है।'' (तज़करातुश्शहादतैन, रूहानी ख़ज़ाईन, भाग 20, पृ. 63, 64)

नमाज़

मुनकिर व फहशा से बचाती है नमाज़		रहमतें और बरकतें हमराह लाती है नमाज़
इब्तदा से इन्तिहा तक है यह सरासर दुआ		आदमी को हक तआला से मिलाती है नमाज़
ज़िक्र व शुक्र अल्लाह का है मोमिन की मेराज		पन्ज वक्त: वस्ल के साग़र पिलाती है नमाज़
ऐ ख़ुदा हम को अता कर हमारी नस्ल को		नेअमतें और बख्शिशें जो जो भी लाती है नमाज
कसरे जानां से कि जूं आती है निदा		आशिकों को यार की चोखट पर लाती है नमाज
एक ही सफ में खड़े हो जाते हैं महमूद व अयाज़		यह सुलूक और यह मसावतें सिखाती है नमाज़
पाकबाज़ी और तहारत और वक्त की पाबन्दगी		कदर दानो को सबक ऐसा बताती है नमाज़

(हज़रत मीर मुहम्मद इस्साईल साहिब)

सम्पादकीय

नया साल मुबारक हो

एक बार फिर हमारे जीवन में नया साल आया है। सारे विश्व में अनेक प्रकार की ख़ुशियों तथा उत्साह के साथ नए साल के प्रोग्राम आयोजित किए गए। कुछ तो परोपकार तथा भलाई के कामों को आगे बढ़ाने का प्रण करते हुए नए साल का स्वागत करते हैं तथा कुछ ऐसे भी हैं जो शराब, बुराइयां तथा गुनाहों के कामों की सफलता के लिए नयी-नयी योजनाएँ बनाते हैं ।

इस्लामी शिक्षानुसार प्रत्येक व्यक्ति का यह फ़र्ज़ है कि वह अपने भीतर झांके कि वह पिछले साल कौन से नेकी तथा भलाई के कार्य नहीं कर सका तथा कौन-कौन से भलाई के कार्य उसके अधूरे हैं, वह उन कार्यों को पूरा करे, तथा यह भी देखे कि उसके अन्दर कौन कौन सी बुराइयाँ हैं जिनसे वह छुटकारा नहीं पा सका और उन बुराइयों को दूर करने का प्रयास करे। साल तो आते जाते रहते हैं, परन्तु साल तो तभी ख़ुशी तथा प्रसन्नता का कारण बन सकते हैं जब इनके द्वारा हमारे जीवन में कुछ सुधार आए तथा हम पहले से अधिक परोपकारी बन जाएँ। यदि हम झूठ अहंकार, घूस, हरामखोरी, गाली, ईर्षा, चुग़ली, जुआ, शराब, आदि बुराइयों को त्यागने का प्रण करते हुए नए साल में प्रवेश होते हैं तो समझें हम कामियाबी तथा उन्नति की दिशा में चल पड़े हैं, परन्तु यदि इस के विपरीत है तो खुशियाँ मनाना व्यर्थ तथा बेकार है। अंधकार तथा भंवर की ओर जाते हुए क्या कोई प्रसन्न होता है।?

आज इन्सान बहुत दु:खी है। हमारे अनेक भाई ऐसे हैं जिनके पास पेट भर खाना, तन ढकने के लिए कपड़े तथा सिर छुपाने के लिए छप्पर तक नहीं है। जब तक समाज अमीर ग़रीब, हिन्दु मुस्लिम में बंटा हुआ रहेगा तब तक क्या हमें सच्ची ख़ुशी मिल सकती है। जब तक बड़े लोग लोग ग़रीबों को अपना भाई समझकर उनके प्रति सहानुभूति तथा हमदर्दी की भावना अपने अन्दर तथा अपने उठने बैठने वालों के अन्दर पैदा नहीं करेंगे तब तक क्या हम उन्नति कर सकते हैं ? और तब तक क्या हमें वास्तव में सच्ची ख़ुशी मिल सकती है ?

इस्लाम धर्म ने हमें शिक्षा दी है कि अपने ग़रीब भाइयों का सदैव ख़्याल रखो, उनके साथ हमदर्दी करो तथा यदि तुम्हारे पास एक रोटी है तो आधी उस ग़रीब भाई को दे दो जो तुम्हारे ही साथ तथा तुम्हारे पड़ोस में रहता है। यदि तुम्हारे घर में दाल सब्ज़ी पकाई जाए तो पड़ोसी को भी उस में से थोड़ा सा भिजवा दिया करो। तुम में सब से अच्छा व्यक्ति वही है जो अन्य के साथ अच्छा व्यवहार करता है। हमारी बद किस्मती है कि हमारे देश में भाषा, जाति, रंग रूप, धर्म तथा फ़िर्क़ों के नाम पर मानव बंटा हुआ है और इसी के आधार पर एक दूसरे से व्यवहार किया जाता है। हालांकि धर्म, जाति, फ़िर्क़ा भाषा तो अनेकता में एकता के प्रतीक हैं। इन सब चीज़ों से ऊंचा उठ कर हमने सोचना है धर्म, जाति, रंग रूप, भाषाएं तो अनेक तथा पृथक-पृथक हो सकती हैं परन्तु दु:ख की पीड़ा तो एक समान ही होती है। ग़रीबी तथा भूख की मार एक जैसी ही होती है। अत: इस नए साल में हमने यह प्रण करना है कि हम प्रत्येक मानव के दु:ख को अपना दु:ख समझेंगे तथा उसके निवारण के लिए हर प्रकार का प्रयास तथा यथा सामर्थ्य एंव संभव बिना थके, जीवन के अन्तिम क्षण तक करते रहेंगे । और न मात्र स्वयं इस कार्य में लगेंगे बल्कि अपने दोस्तों, सज्जनों पड़ोसियों गांव वालो तथा रिश्तेदारों सब को अपने साथ इस कार्य में लगाएंगे ।

यही एक साधन है जिसके द्वारा हम और हमारा समाज सुखी तथा ख़ुशियों से परिपूर्ण हो सकता है । आइये आज हम इसी प्रण तथा प्रतिज्ञा के साथ नए साल का स्वागत करें और अपने समाज तथा देश को उन्नतिशील बनाएँ। अल्लाह तआला हम सबको इस नेक कार्य की शक्ति प्रदान करे ।

(शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

सारांक्ष ख़ुत्बः जुम्अ

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल् मसीह अल् ख़ामिस
अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल् अज़ीज़
25 दिसम्बर 2015 स्थान - बैतुल फ़ुतूह, लन्दन

यह दिन कादियान में जलसा सालाना के दिन हैं। कादियान के जलसा सालाना को विशेष रूप से इस मामले में भी महत्त्व है कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बस्ती में हो रहा है और यहीं आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से इजाज़त पाकर जलसे शुरू करवाए थे।

जो कादियान जा सकते हैं afford कर सकते हैं उन्हें जाना चाहिए लेकिन अपने देश के जलसे हैं उन में भी अवश्य शामिल होना चाहिए। भारत के अहमदियों को विशेष रूप से कोशिश कर के कादियान में आना चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की वर्णन की गई रिवायतों के हवाले से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने के जलसों का और अल्लाह तआला के कुछ इल्हामों का वर्णन जो उन दिनों में पूरे हुए और आज भी हो रहे हैं और कुछ अगले ज़मानों में पूरे होने वाले हैं।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

यह दिन कादियान में जलसा सालाना के दिन हैं। कल से इंशा अल्लाह तआला कादियान का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। इसी तरह आज आस्ट्रेलिया का जलसा सालाना भी शुरू हो चुका होगा और अमेरिका के वेस्ट कोस्ट का जलसा भी शुरू होने वाला है। समय का अंतर है इसलिए कुछ देर बाद

शायद शुरू हो और शायद कुछ और देशों में भी इन दिनों में जलसे हो रहे होंगे या होने वाले होंगे। अल्लाह तआला इन सभी जलसों को हर लिहाज़ से मुबारक करे। बुराइयां करने वालों की शरारतों और उनकी बुराई से सुरक्षित रखे।

कादियान के जलसा सालाना को विशेष रूप से इस मामले में भी महत्त्व है कि यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बस्ती में हो रहा है और यहीं आप अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से इजाज़त पाकर जलसे शुरू करवाए थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने अपने विभिन्न भाषणों और उपदेश में जलसा सालाना के बारे में हमें उस समय से भी आगाह किया है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ज़माना था और जमाअत की शुरुआत थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो ने जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसों का नक्शा खींचा है शुरू के जलसे कैसे होते थे, वहाँ कुछ इलहामों का भी ज़िक्र फरमाया कि कैसे कुछ इलहाम को अल्लाह तआला ने इन दिनों में पूरा होता दिखाया और दिखा रहा है। कुछ इलहाम अगले ज़माने के बारे में होंगे या एक बार पूरे हो चुके दोबारा भी पूरे होंगे। इस समय में इस संबंध में हज़रत मुस्लेह मौऊद के कुछ हवाले प्रस्तुत करता हूँ।

प्रारंभिक जलसों में से एक का उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद अपने बचपन का प्रभाव और जमाअत की हालत का वर्णन करते हुए फरमाते हैं। यह 1936 ई की बात है जब आप फरमा रहे हैं कि लगभग चालीस साल पहले इस जगह पर जहां अब मदरसा अहमदिया के लड़के पढ़ते हैं(कादियान में जो जगह है) एक टूटी फूटी दीवार हुआ करती थी। एक चारदीवार थी जिसने पूरे कादियान की आबादी को घेरा हुआ था। कहते हैं कि हमारे बुज़ुर्गों के समय में कादियान की हिफाज़त के लिए वह कच्ची दीवार बनी हुई थी। वह खासी चौड़ी थी और एक गड्डा उस पर चल सकता था।(यानी बैलगाड़ी) फिर अंग्रेज़ी सरकार ने जब उसे तुड़वा कर नीलाम कर दिया तो इसका कुछ टुकड़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने महमान ख़ाना बनाने के इरादे से ले लिया। वह एक ज़मीन लंबी सी चली जाती थी एक लंबा टुकड़ा था। कहते हैं कि मैं नहीं कह सकता कि इस समय 93 ई था या 94 ई या 95 ई। लगभग यही ज़माना था। यही दिसंबर के दिन थे। यही मौसम था यही महीना था। कुछ लोग जो अभी अहमदी नहीं कहलाते थे क्योंकि अभी अहमदी नाम से जमाअत याद नहीं की जाती थी। अहमदी नाम जो है 1901 ई में रखा गया इससे पहले बाकायदा अहमदी की एक निशानी नहीं थी मगर अहमदी कहलाते तो नहीं थे परन्तु यही उद्देश्य और यही मुद्दा लेकर वह कादियान में एकत्र हुए। कहते हैं कि मैं नहीं कह सकता क्या वे सारी कार्रवाई इसी जगह हुई या कार्रवाई का कुछ हिस्सा इस जगह हुआ(जहां उल्लेख फरमा रहे हैं) और कुछ मस्जिद में हुआ क्योंकि मेरी(हज़रत मुस्लेह मौऊद की।) उम्र

इस समय सात आठ साल की होगी। इसलिए अधिक विस्तृत रूप से इस बात को याद नहीं रख सका। मैं उस समय इस जलसा के महत्त्व को नहीं समझता था। मुझे इतना याद है कि मैं वहां जमा होने वाले लोगों के आसपास दौड़ता और खेलता फिरता था। मेरे लिए उस समय के लिहाज़ से यह हैरानी की बात थी कि कुछ लोग इकट्ठा हैं। इस दावीर पर एक दरी बिछी हुई थी जिस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बैठे थे और चारों ओर दोस्त थे जो जलसा सालना के नाम से जमा थे। (कहते हैं) मुमकिन है मेरी याददाश्त ग़लती करती हो और दरी एक न हो दो हूं लेकिन जहां तक मुझे याद पड़ता है एक ही दरी थी। एक दरी पर कुछ लोग बैठे थे। डेढ़ सौ होंगे या दो सौ और बच्चे मिलाकर उनकी संख्या ढाई सौ की संख्या में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने प्रकाशित की थी। कहते हैं पर विचार करता हूं कि वह एक दरी थी या दो दरियां। बहरहाल उनके लिए इतनी ही जगह थी जितनी इस जलसा गाह(जिस में यह ज़िक्र कर रहे हैं उस) के स्टेज की जगह है।(बल्कि आजकल हमारे जलसों के स्टेज तो और भी बड़े होते हैं।) कहते हैं मैं नहीं कह सकता हूं लेकिन मैं इतना जानता हूँ कि वह दरी तीन जगह बदली गई।(एक जगह से उठाई, थोड़ा देर बाद वहां से बदल कर दूसरी जगह से,और फिर तीसरा जगह से) पहले एक जगह बिछाई गई। ठोड़ी देर के बाद वहां से उठाकर उसे कुछ दूर बिछाया गया। कहते हैं कि अपने बचपन की आयु में नहीं सकता कि क्या इन जमा होने वालों को लोग रोकते थे और कहते थे कि तुम्हारा हक नहीं कि इस जगह दरी बिछाओ या कोई और कारण था। बहरहाल मुझे याद है कि दो तीन बार इस दरी की जगह बदली गई।

हुज़ूर फरमाते हैं कि

"आज जो लोग कादियान में इस समय जलसा के उद्देश्य से गए हुए हैं वह शायद उस वक्त की हालत का अनुमान नहीं कर सकते हैं। अब तो एक व्यापक जलसा गाह अल्लाह तआला की कृपा से उपलब्ध है जिसे पक्की चारदीवारी से घेरा गया है और इस में यह प्रयास भी है कि अधिक से अधिक सुविधाएं मुहैया हूँ। 1936 ई में जब हज़रत मुस्लेह मौऊद यह फरमा रहे हैं तो इस के बाद विभाजन तक व्यापक प्रबंध होते गए। विभाजन के समय कादियान पर बाद में ऐसा दौर भी आया जब केवल दारुल मसीह और आसपास के कुछ घरों तक अहमदी सीमित हो गए बल्कि कुछ सौ को छोड़ कर सब को हिजरत करनी पड़ी और यह जो कुछ अहमदी थे वे भी बड़े कमजोर थे लेकिन आज फिर अल्लाह तआला की कृपा से कादियान में विस्तार पैदा हो रहा है और वहां जाने वाले जो पहली बार गए होंगे, नई नस्लें हैं, युवा हैं, या बाहर से आए हुए लोग हैं। अब केवल इस विस्तार को देख रहे होंगे इतिहास के झरोके में से झांक कर देखें तो अल्लाह तआला के फज़लों की बारिश दिखती है। आज रबवा के रहने वाले भी इन दिनों बेचैन होंगे तो उन्हें भी याद रखना चाहिए कि हालात हमेशा एक जैसे नहीं रहते। इंशा अल्लाह तआला वहाँ भी हालात बदलेंगे और रौनकें भी स्थापित होंगी लेकिन रबवा के रहने वालों को दुआओं की तरफ ध्यान देना होगा। पाकिस्तान में रहने वालों को दुआओं की तरफ ध्यान देना होगा। अल्लाह तआला फरमाता है

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(आले इम्रान :150) कि और कमज़ौरी न दिखाओ और ग़म मत करो, जबकि वास्तव में तुम ही विजय होने वाले हो, जबकि तुम मोमिन हो। शर्त यह लगाई जबकि तुम मोमिन हो। तो ईमान में अधिकता और दुआओं पर ज़ोर अल्लाह तआला के फज़लों को खींच के हालात फिर बदलते हैं।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक

इलहाम के हवाले से वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद की एक रिवायत का वर्णन करते हुए हुज़ूर फरमाते हैं कि

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक इल्हाम है जो दो अर्थ रखता है। हम कोई विशेष अर्थ नहीं कर सकते और न हमें पता है कि वह कब और कैसे पूरा होगा और वह इल्हाम है कि "लंगर उठा दो।" अब हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि इस लंगर से अगर नावों वाला लंगर मतलब लिया जाए(यानी नाव में जब लंगर डाला जाता है खड़े पानी में खड़ा करने के लिए तो) इसका अर्थ यह होगा कि बाहर जाओ और ख़ुदा तआला के संदेश को हर जगह फैलओ और अगर लंगर से ज़ाहरी लंगर ख़ाना मतलब लिया जाए तो इस का अर्थ यह होगा कि आने वालों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि अब लंगर ख़ाने का प्रबंधन नहीं किया जा सकता। इसलिए लंगर उठा दो और लोगों से कहो कि वे अपने आवास और भोजन का ख़ुद प्रबंध कर लें। इन दोनों अर्थ में हम किसी एक अर्थ को अभी तय नहीं कर सकते और न समय निर्धारित कर सकते हैं कि कैसे कब एसी घटना होगी। बहरहाल, जब तक मेहमानों को ठहराना मानव शक्ति में है, तब तक हमारे लिए यही नुस्ख़ा है कि "वस्सेअ मकानक" कि तुम अपने मकान बढ़ाते जाओ और मेहमानों के लिए क्षमता निकालो।

(उद्धरित ख़ुत्बाते महमूद भाग 35 पृष्ठ 397-398)

तो इसके लिए कम से कम कादियान में और जहां जहां दूसरी जमाअतें भी यह कर सकती हैं वहाँ आवास के लिए अस्थायी और स्थायी व्यवस्था करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला के फज़ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम "वस्सेअ मकानक।" के अधीन अपने निवास में भी कादियान में अब अल्लाह तआला की कृपा से बड़ा विस्तार पैदा हो रहा है और नए नए गेस्ट हाऊस और स्थान बन गए हैं और मेहमानों को जिस हद तक सुविधा हो सकती है प्रदान की जाती है लेकिन बहरहाल घर वाली सुविधा तो नहीं इसलिए मेहमानों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि जितनी सुविधा दी गई है उसके अंदर रहते हुए ही अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हुए जलसा में आने का जो मूल उद्देश्य है उसे पूरा करें और केवल मेहमान नवाज़ी या आवास की सुविधाओं की तरफ न देखें।

जलसे में आने वालों की ज़िम्मेदारियों के बारे में हुज़ूर वर्णन करते हैं कि

" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक और इल्हाम और इच्छा का ज़िक्र करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इच्छा फ़रमाई कि जमाअत के वे सभी दोस्त जिनका जलसा में आना संभव हो वह जमा हुआ करें और अल्लाह तआला के ज़िक्र के सुनने या सुनाने में शामिल हुआ करें जो इन दिनों यहां किया जाता है। कहते हैं कि अभी तक हमारे देश में सफर के संसाधन इतने आसान नहीं जितने यूरोप में आसान हैं और भारत के बाहर तो कई देशों में इन संसाधनों में और भी कमी है जैसे कि अफगानिस्तान या ईरान या भारत के बाहर के द्वीप हैं फिर भी अभी हमारी जमाअत में ऐसे लोग शामिल नहीं।(उस ज़माने का वर्णन कर रहे हैं अभी भी बहुत अधिक धनी तो नहीं लेकिन बहरहाल अच्छे मालदार लोग शामिल होते जा रहे हैं) जो दूर देशों से जबकि विमानों की आवाजाही ने सफर काफी आसान कर दिया है जलसा सालाना के दिनों में कादियान पहुंच सकें। लेकिन अगर ऐसे लोग हमारी जमाअत में शामिल हों। (यह हज़रत मुस्लेह मौऊद अपने समय का

उल्लेख कर रहे हैं) तो उन दूर देशों के लोगों के लिए भी जहां हर प्रकार के सफर के संसाधन आसानी से उपलब्ध आ सकते हैं यहां पहुंचना कोई मुश्किल नहीं रहता और अधिकतम उनके लिए रुपए का सवाल रह जाता है मगर ऐसे लोग अभी हमारी जमाअत में बहुत कम हैं या वास्तव में बिल्कुल नहीं।

आज जब हम देखते हैं अल्लाह तआला की कृपा देखते हैं कि दुनिया के कई देशों से लोग वहां कादियान पहुंचते हैं।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि कादियान आने वालों को मैं नसीहत करता हूँ, जलसा में आने वालों को मैं समझाता हूँ कि अक्सर भीड़ और काम करने वालों की कमी के कारण आप किसी तकलीफ को देखें तो परेशान न हों, ठोकर न खा जाएं। इस नसीहत को हमेशा याद रखना चाहिए कि चाहे यहाँ जलसा हो या कहीं और हो रहे हों।

बहरहाल मेहमान नवाज़ी करने वाले अपनी पूरी कोशिश करते हैं कि हर तरह मेहमान नवाज़ी की जाए लेकिन फिर भी कमियां रह जाती हैं जैसा कि मैंने कहा कि आज भी कादियान आने या कहीं भी जलसा में जाने वाले याद रखें कि प्रशासनिक मामलों के कारण कुछ कष्ट अगर पहुंचें तो ख़ुशी से बर्दाशत कर लें और उसे अपने ईमान की ठोकर का कारण न बनाएं। अल्लाह तआला कादियान का जलसा भी और बाकी जलसे भी अपने फज़्लों और बरकतों से यह सारे दिन गुज़ारे और उन्हें अन्त तक ले जाए और हर जलसा अल्लाह तआला के फज़्लों और बरकतों को समेटने वाला हो और सब शामिल होने वाले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं के वारिस भी बनें और ख़ुद भी इन दिनों में बहुत दुआएँ करें।

ख़ुत्बे के आख़िर में हुज़ूर अनवर ने रूस के पहले अहमदी शहीद का ज़िक्र करते हुए फरमाया

"रूस में किरगिज़स्तान में जो पहले रूस का राज्य था वहाँ एक हमारे अहमदी को शहीद कर दिया। जिनका नाम यूनुस अब्दुल जलील ओब था। 22 दिसंबर 8: 50 मिनट करगीज़स्तान के पश्चिम में काशगर कशतक गांव स्थित है यहाँ दो व्यक्तियों ने गोलीबारी की जिसके नतीजे में महोदय शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

यूनुस अब्दुल जलीलोव (Yunusjan Abdujalilov) साहिब यह 1978 ई में पैदा हुए थे। 2008 ई में उन्होंने बैअत की थी और आरंम्भिक अहमदियों में इनकी गिनती होती है। उनके रिश्तेदारों के द्वारा बड़ा विरोध भी हुआ लेकिन यह बैअत के अहद पर कायम रहे। बैअत के बाद कहते हैं उन में बड़ा असाधारण रूहानी बदलाव आया। हर समय धार्मिक शिक्षा की खोज में रहते थे। इस बारे में मुबल्लिग़ों के साथ भी हर समय संपर्क में रहते थे और जब भी धर्म की कोई नई बात सीखते तो बहुत ख़ुश होते। पाचों समय की नमाज़ बा-जमाअत के पाबन्द थे शहादत के समय अपनी जमाअत के सैक्रेटरी के रूप में सेवा कर रहे थे। जमाअत के बड़े सक्रिय सदस्य थे। अपने पीछे उन्होंने पत्नी तीन बेटियां और एक बेटा शोक संतप्त छोड़े हैं।

पहले रशिया था अब करगीज़स्तान रशिया में यह इस्लाम और अहमदियत की राह में अपना खून प्रस्तुत करने वाले पहले शहीद हैं। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करता चला जाए और उनके ख़ून की हर बूंद से अनगिनत नेक स्वभाव और सईद रूहें जमाअत में शामिल करने का कारण बने। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा फरमाए उनकी औलाद का भी हाफिज़ और नासिर हो और उन के ईमान और विश्वास में तरक्की देता चला जाए।

☆ ☆ ☆

विश्व के महानतम अवतार
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का
पवित्र जीवन

भाग –26

लेखक – हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि.

पिछले भाग का सारांश :- *कबीला बनू क़ुरैज़ा का विश्वासघात तथा इस के परणिाम स्वरूप यहूद के इस क़बीले पर विजय के बाद इस्लाम के ऊपर होने वाले अत्याचार का रुख़ बदल गया इस क़बीले का तौरेत के आदेश अनुसार मदीना से निष्कासन हुआ। यहां पर इस्लाम तथा अन्य धर्मों में जंगों का एक संक्षिप्त तुलनात्मक वर्णन आवश्यक है। यहूद तथा इसाईयत में युद्ध की शिक्षा के बाद इस्लाम की शिक्षा का वर्णन किया जा रहा है। अब आगे....*

ख़न्दक़-युद्ध के बाद काफ़िरों के मुसलमानों पर आक्रमण

अहज़ाब-युद्ध से वापस लौटने के बाद यद्यपि काफ़िरों के साहस टूट चुके थे तथा उनके हौसले पस्त हो गए थे परन्तु उनका यह अहसास शेष था कि हम बहुमत में हैं और मुसलमान अल्पसंख्या में हैं, वे यह समझते थे कि जहाँ-जहाँ भी संभव होगा हम मुसलमानों को इक्का-दुक्का पकड़ कर मार सकेंगे तथा इस प्रकार अपने अपमान का बदला ले सकेंगे। अत: अहज़ाब की पराजय के थोड़े ही समय बाद मदीना के आस-पास के क़बीलों ने मुसलमानों पर छापे मारना प्रारम्भ कर दिए। अत: फ़ज़ारह जाति के कुछ सवारों ने मदीने के निकट छापा मारा तथा मुसलमानों के ऊँट जो वहाँ चर रहे थे उनके चरवाहे का वध कर दिया और उसकी पत्नी को क़ैद कर लिया और ऊँटो को लेकर भाग गए। क़ैदी स्त्री तो किसी न किसी प्रकार भाग आई परन्तु शत्रु ऊँटों का एक भाग लेकर भाग जाने में सफल हो गया। इसके एक माह बाद उत्तर की ओर ग़तफ़ान क़बीले के लोगों ने मुसलमानों के ऊँटों के रेवड़ को लूटने का प्रयास किया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि. को दस सवारों के साथ परिस्थितियां मालूम करने तथा रेवड़ों की सुरक्षा के लिए भेजा परन्तु शत्रु ने अवसर पाकर उनका वध कर दिया। मुहम्मद बिन मुस्लिमा को भी वे अपनी ओर से मार कर फेंक गए थे परन्तु वास्तव में वे बेहोश थे। शत्रु के चले जाने के बाद वह होश में आए तथा मदीना पहुँच कर परिस्थितियों की सूचना दी और बताया कि मेरे सब साथी मारे गए और केवल मैं बचा हूँ। कुछ दिनों के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक दूत जो रूमी सरकार की ओर भिजवाया गया था, उस पर 'जरहम' क़बीले ने आक्रमण किया और उसे लूट लिया। उसके एक माह बाद बनू फ़ज़ारह ने मुसलमानों के एक दल पर आक्रमण किया और उसे लूट लिया। शायद यह आक्रमण किसी धार्मिक शत्रुता

के कारण नहीं था; क्योंकि बनू फ़ज़ारह डाकुओं का एक क़बीला था जो प्रत्येक जाति के लोगों को लूटते और वध करते रहते थे। उस युग में ख़ैबर के यहूदी भी जो अहज़ाब युद्ध का कारण बने थे अपनी पराजय का बदला लेने के लिए इधर-उधर के क़बीलों को उकसाते रहे तथा रूमी सरकार के सीमावर्ती क्षेत्रों के अधिकारियों तथा क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध जोश दिलाते रहे। अस्तु अरब के काफ़िरों को मदीने पर आक्रमण करने का तो साहस न रहा था तथापि वे यहूद के साथ मिलकर सारे अरब में मुसलमानों के लिए संकट पैदा करने तथा उन्हें लूटने के लिए साधन जुटा रहे थे परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अभी तक काफ़िरों के साथ अन्तिम निर्णायक युद्ध करने का निर्णय नहीं किया था तथा आपस. इस प्रतीक्षा में थे कि यदि संधि के साथ यह गृह-युद्ध समाप्त हो जाए तो उचित है।

मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पन्द्रह सौ सहाबा के साथ मक्का की ओर रवानगी

इस अवधि में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक स्वप्न देखा जिस का वर्णन क़ुर्आन करीम में इन शब्दों में आता है —

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا

(सूरह फ़त्ह-28)

अर्थात् तुम अवश्य अल्लाह तआला की इच्छानुसार मस्जिद-ए-हराम में अमन के साथ प्रवेश करोगे। तुम में से कुछ के सर मुंडे हुए होंगे और कुछ के बाल कटे हुए होंगे (हज के समय सर मुंडाना और बाल कटाना आवश्यक होता है) तुम किसी से नहीं डर रहे होगे। अल्लाह तआला जानता है जो तुम नहीं जानते। जिस कारण उसने उस स्वप्न के पूरा होने से पहले एक और विजय निर्धारित कर दी है जो स्वप्न वाली विजय की पृष्ठभूमि होगी तथा स्वप्न में वास्तव में मैत्री और अमन के साथ मक्का-विजय की सूचना दी गई थी, परन्तु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसका अर्थ यही समझा कि कदाचित हमें ख़ुदा तआला की ओर से काबा का तवाफ़ (परिक्रमा) करने का आदेश दिया गया है। चूंकि इस बोधभ्रम से इस प्रकार की नींव पड़ने वाली थी। अल्लाह तआला ने इस ग़लती से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अवगत न किया। अत: आपस. ने अपने सहाबा रज़ि. में इस बात की घोषणा की तथा उन्हें भी अपने साथ चलने का आदेश दिया, परन्तु फ़रमाया " हम केवल काबा का तवाफ़ करने की नीयत से जा रहे हैं, किसी प्रकार का प्रदर्शन अथवा कोई कार्य न किया जाए जो शत्रु के क्रोध का कारण हो।" अत: आपस. ने फ़रवरी 628 ई. के अन्त में पन्द्रह सौ श्रद्धालुओं के साथ मक्का की ओर प्रस्थान किया (एक वर्ष के बाद आप के साथ कुल पन्द्रह सौ लोगों का जाना बताता है कि इस से एक वर्ष पूर्व अहज़ाब युद्ध के अवसर पर इस संख्या से कम ही सिपाही होंगे; क्योंकि एक वर्ष में मुसलमानों की संख्या में बढ़ोतरी हुई थी।

अत: अहज़ाब युद्ध में युद्ध करने वालों की संख्या जिन इतिहासकारों ने तीन हज़ार लिखी है यह ग़लती की है, सही यही है कि उस समय बारह सौ सैनिक थे) हज के दल के आगे कुछ दूरी पर बीस सवार इसलिए चलते थे ताकि यदि शत्रु मुसलमानों को हानि पहुँचाना चाहे तो उन्हें समय पर सूचना मिल जाए। जब मक्का वालों को आप के इस इरादे की सूचना मिली तो इसके बावजूद कि उनकी अपनी आस्था भी यही थी कि काबा के तवाफ़ करने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं करना चाहिए तथा इसके बावजूद कि मुसलमानों ने स्पष्ट तौर पर घोषणा कर दी थी कि वे केवल काबा का तवाफ़ करने के लिए जा रहे हैं, किसी प्रकार के झगड़े या उपद्रव के लिए नहीं जा रहे। मक्का वालों ने मक्का को एक सुरक्षित दुर्ग के रूप में परिवर्तित कर दिया तथा आस-पास के कबीलों को भी अपनी सहायता के लिए बुला लिया। जब आप स. मक्का के निकट पहुँचे तो आप को यह सूचना प्राप्त हुई कि क़ुरैश ने चीतों की खालें पहन ली हैं और अपनी पत्नियों तथा बच्चों को साथ लिया है और ये क़समें खाई हैं कि वे आप स. को गुज़रने नहीं देंगे। अरब का यह प्रचलन था कि जब जाति मृत्यु का निर्णय कर लेती तो उस के सरदार चीते की खालें पहन लेते थे, जिस का अर्थ यह होता था कि अब बुद्धि का समय नहीं रहा, अब हम दिलेरी और निर्भीकता से प्राण दे देंगे। इस सूचना के थोड़े समय बाद ही मक्का की सेना का सेना के पहुँचने से पूर्व अल्प संख्यक घुड़ सवार दल मुसलमानों के सामने आ खड़ा हुआ। अब इस स्थान से आगे केवल इस स्थिति में जा सकते थे कि तलवार के बल पर शत्रु को परास्त किया जाता।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चूंकि निर्णय करके आए थे कि हम किसी भी अवस्था में नहीं लड़ेंगे। आप ने एक कुशल मार्ग दर्शक को जो जंगल के मार्गों से परिचित था इस बात पर नियुक्त किया कि वह मुसलमान श्रद्धालुओं को जंगल के मार्ग से ले जा कर मक्का तक पहुँचा दे। यह मार्ग-दर्शक व्यक्ति आप स. तथा आपके साथियों को लेकर हुदैबिया के स्थान पर जो मक्का के निकट था जा पहुँचा। यहां आपस. की ऊँटनी खड़ी हो गई और उसने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। सहाबा रज़ि. ने कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप स. की ऊँटनी थक गई है, आप उसके स्थान पर दूसरी ऊँटनी पर सवार हो जाएं परन्तु आप स. ने फ़रमाया नहीं, नहीं यह थकी नहीं अपितु ख़ुदा की इच्छा कदाचित यही मालूम होती है कि हम यहां ठहर जाएं और मैं यहां पर ही ठहर कर मक्का वालों से प्रत्येक यत्न से अनुरोध करूँगा कि वे हमें हज करने की अनुमति दे दें चाहे वे कोई भी शर्त तय करें मैं स्वीकार कर लूँगा। उस समय तक मक्का की सेना मक्का से बाहर एक दूरी पर खड़ी थी और मुसलमानों की प्रतीक्षा कर रही

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○
(سورہ بنی اسرائیل آیت 31)
Mob. : 09986670102
09036915406
Prop.
Fazal-e-Haq Anwar-ul-Haq
Eajaz-ul-Haq Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments
Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.
Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical, Main Road, Yadgir, Karnataka

थी। यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चाहते तो बिना लड़ाई किए मक्का में प्रवेश कर सकते थे परन्तु चूंकि आप निर्णय कर चुके थे कि प्रथम आपस. यही प्रयास करेंगे कि मक्का वालों की आज्ञा लेकर काबा का तवाफ़ करें और युद्ध केवल इसी अवस्था में करेंगे कि मक्का वाले स्वयं युद्ध प्रारम्भ करके युद्ध करने पर विवश करें। इसलिए आपस. ने मक्का का मार्ग खुला होने के बावजूद हुदैबिया के स्थान पर डेरा डाल दिया। थोड़ी ही देर में आप के हुदैबिया पर डेरा डालने की सूचना मक्का की सेना को भी पहुँच गई तो उसने बड़ी शीघ्रता से पीछे हट कर मक्का के निकट पंक्तिबद्ध हो गई। सर्वप्रथम बदील नामक एक सरदार आपस. से बात करने के लिए भेजा गया। जब वह आप की सेवा में उपस्थित हुआ तो आपस. ने फ़रमाया— मैं तो केवल काबा का तवाफ़ करने आया हूँ। हाँ यदि मक्का वाले हमें विवश करें तो हमें लड़ना पड़ेगा। इसके बाद मक्का के सेनापति अबू सुफ़यान का दामाद 'उर्वा' आप की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने नितान्त धृष्टता के साथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा यह आवारा लोगों का गिरोह आप अपने साथ लेकर आए हैं, मक्का वाले उन्हें किसी अवस्था में भी अपने नगर में प्रवेश नहीं करने देंगे। इसी प्रकार एक के बाद दूसरा दूत आता रहा। अन्ततः मक्का वालों ने सन्देश दिया कि चाहे कुछ भी हो जाए इस वर्ष तो हम आपको तवाफ़ नहीं करने देंगे क्योंकि इसमें हमारा अपमान है। हाँ यदि आप अगले वर्ष आएं तो हम आप को अनुमति दे देंगे। कुछ आस-पास के लोगों ने मक्का वालों से आग्रह किया कि ये लोग केवल काबा का तवाफ़ करने के लिए आए हैं आप लोग इन्हें क्यों रोकते हैं परन्तु मक्का के लोग अपनी हठ पर अड़े रहे। इस पर बाहरी कबीलों के लोगों ने मक्का वालों से कहा कि आप लोगों का यह ढंग संकेत करता है कि आप लोगों के दृष्टिगत उपद्रव फैलाना है संधि दृष्टिगत नहीं। इसलिए हम लोग आप का साथ देने के लिए तैयार नहीं। इस पर मक्का के लोग भयभीत हो गए तथा उन्होंने इस बात पर सहमति प्रकट की कि मुसलमानों के साथ संधि करने का प्रयास करेंगे। जब इस बात

की सूचना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुँची तो आपस. ने हज़रत उसमान रज़ि. जो बाद में आपके तृतीय ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) हुए को मक्का वालों से संवाद करने के लिए भेजा। जब हज़रत उसमान रज़ि. मक्का पहुँचे तो चूंकि मक्का में उनकी अत्यधिक रिश्तेदारियां थी, उनके संबंधी लोग उनके चारों ओर एकत्र हो गए तथा उन से कहा आप तवाफ़ कर लें परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगले वर्ष आकर तवाफ़ करें परन्तु उसमान रज़ि. ने कहा कि मैं अपने स्वामी के बिना तवाफ़ नहीं कर सकता। चूंकि मक्का के सरदारों से आप रज़ि. के संवादों का क्रम लम्बा हो गया तो कुछ लोगों ने बुरी नीयत से यह समाचार फैला दिया कि उस्मान का वध कर दिया गया है। यह समाचार फैलते-फैलते रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक भी जा पहुँचा। इस पर आपस. ने सहाबा रज़ि. को एकत्र किया और फ़रमाया दूत की जान हर क़ौम में सुरक्षित होते हैं। तुम ने सुना है कि उसमान रज़ि. का मक्का वालों ने वध कर दिया है। यदि यह सूचना सही निकली तो हम बलपूर्वक मक्का में प्रवेश करेंगे (अर्थात् हमारा पहला इरादा कि संधि के साथ मक्का में प्रवेश करेंगे जिन परिस्थितियों के अन्तर्गत था वे चूंकि परिवर्तित हो जाएँगी, इसलिए हम उस इरादे के पाबन्द नहीं रहेंगे) जो लोग यह वचन देने के लिए तैयार हों कि यदि हमें आगे बढ़ना पड़ा तो या हम विजय प्राप्त करके लौटेंगे या एक-एक करके मैदान में मारे जाएँगे वे इस संकल्प के साथ मेरी बैअत करें। आपस. का यह घोषणा करना था कि पन्द्रह सौ श्रद्धालु जो आपके साथ आए थे पल भर में पन्द्रह सौ सैनिकों के रूप में परिवर्तित हो गए और पागलों की भांति एक दूसरे को फांदते हुए उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ पर दूसरों से पहले बैअत करने का प्रयास किया। यह बैअत समस्त इस्लामी इतिहास में एक महान महत्त्व रखती है और वृक्ष की प्रतिज्ञा कहलाती है क्योंकि जिस समय यह बैअत ली गई उस समय रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक वृक्ष के नीचे बैठे थे। जब तक उस बैअत में सम्मिलित होने वाला अन्तिम व्यक्ति भी संसार में जीवित रहा वह गर्व से बैअत की चर्चा किया करता था; क्योंकि पन्द्रह सौ लोगों में से किसी एक व्यक्ति ने भी यह प्रतिज्ञा करने से संकोच नहीं किया था कि यदि शत्रु ने इस्लामी दूत को मार दिया है तो आज दो बातों में से एक बात अवश्य पैदा करके हटेंगे। या तो वे सायंकाल से पूर्व मक्का पर विजय प्राप्त करेंगे या सायंकाल से पूर्व रणभूमि में मारे जाएँगे, परन्तु मुसलमान अभी बैअत से निवृत्त ही हुए थे कि हज़रत उस्मान रज़ि. वापस आ गए और उन्होंने बताया कि मक्का वाले इस वर्ष तो 'उमरा' की अनुमति नहीं दे सकते परन्तु अगले वर्ष के लिए अनुमति देने को तैयार हैं। अत: इस बारे में समझौता करने के लिए उन्होंने अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर दिए हैं। हज़रत उस्मानरज़ि. के आने के थोड़े ही समय बाद मक्का का सुहैल नामक एक सरदार समझौता करने के लिए आपस. की सेवा में उपस्थित हुआ और यह समझौता लिखा गया।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

दुनिया में शान्ति स्थापना के लिए इस्लाम की शिक्षा

(युसफ अली सागर, हिमाचली)

अल्लाह तआला ने सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की और इस सम्पूर्ण सृष्टि में उसने मनुष्य को सब से सुन्दर बनाया ताकि वह उसकी उपासना कर सके और अल्लाह तआला द्वारा बताए गए सनमार्ग पर चलकर अपने रचयिता से मिल सके। परन्तु आज के कलयुग में परमेश्वर द्वारा रचे गए संसार और मनुष्य की ऐसी दशा हो गई है कि जिसको शब्दों में व्यक्त करना अति कठिन है। चारों तरफ अशान्ति, हिंसा, आतंक, अत्याचार फैला हुआ है। मनुष्य अपने जन्म के उद्देश्य को भूलकर सांसारिक लोभों में फंस चुका है। ख़ुदा के अस्तित्व को भूल चुका है प्रत्येक तरह के संबंध माला के टूटे हुए मोतियों की तरह बिखरते जा रहे हैं। संसार में जितने भी अवतार आए उन्होंने मानवजाति को प्रेम व शान्ति का संदेश दिया और प्रत्येक धर्म का मूल उद्देश्य यही है कि संसार में प्रेम व शान्ति की स्थापना हो इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी मानवजाति को प्रेम व शान्ति का उपदेश दिया और पवित्र क़ुरआन और सम्पूर्ण धर्मग्रन्थों ने भी मानवजाति को प्रेम व शान्ति का उपदेश दिया। इस्लाम धर्म का दूसरा नाम ही शान्ति है।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (571-632 ई.) ने एक धर्म की स्थापना की जिसका नाम अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में इस्लाम रखा और इस धर्म में शामिल होने वालों का नाम मुसलमान रखा जैसा कि पवित्र क़ुरआन में वर्णित है।

اِنَّ الدِّیۡنَ عِنۡدَ اللّٰہِ الۡاِسۡلَامُ (आले इमरान : 19)अर्थात नि:संदेह अल्लाह के निकट धर्म इस्लाम ही है। और फिर एक जगह फरमाता है। هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ (अल-हज्ज : 79) अर्थात अल्लाह ने तुम्हें मुसलमान के नाम से पुकारा है।''

इस्लाम का अर्थ :-

इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है जो 'सलिमा' से बना है। सलिमा का अर्थ है शान्ति व सुरक्षा। इस्लाम के संस्थापक ने फरमाया ''शान्ति व सुरक्षा इस्लाम में ही है'' और एक कथन में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते हैं ''मुसलमान वही है जिस की जिह्वा व हाथ से सम्पूर्ण मानवजाति सुरक्षित रहे'' अल्लाह तआला सम्पूर्ण मानव जाति को संबोधित करते हुए फरमाता है कि

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ

(युनस : 26)और अल्लाह शान्ति व सुरक्षा के घर की तरफ बुलाता है।

शान्ति स्थापना के लिए पवित्र क़ुरआन की शिक्षाएँ।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ

(अल-अनआम : 109) अर्थात दूसरे ख़ुदाओं को गालियां न दो

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ

(अल-माईदा : 9) अर्थात इंसाफ करो यह तक्वा के सबसे अधिक निकट है।

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ

(अल्-हुजरात : 11)अर्थात आपस में मैत्रिता रखो

لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ

(अल्-हुजरात : 12) अर्थात किसी कौम को नीच समझ कर उस से हंसी ठट्ठा न करो

اَوْفُوا الْمِكْيَالَ

(हूद : 86)अर्थात मापदंड को पूरा-पूरा तोलो।

शान्ति स्थापना के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र कथन

इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन्हें शान्ति का अवतार भी कहा जा सकता है। आपने सम्पूर्ण मानवजाति को हमेशा शान्ति, प्रेम व भाईचारे के साथ जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी आपके सम्पूर्ण पवित्र जीवन में कहीं भी घृणा अशान्ति व शत्रुता दिखाई नहीं देती आपने और आपके साथियों ने लगातार दस वर्ष मक्का वासियों के अत्याचार सहन किए लेकिन कभी भी उनके साथ शत्रुत्रा वाला व्यवहार न किया बल्कि असहनीय अत्याचारों के होते हुए भी आप ने अपने शत्रुओं को मैत्री का संदेश दिया। आपने संसार में शान्ति स्थापना हेतु जो उपदेश दिए उन में से कुछ निम्नलिखित हैं।

कभी किसी को उदास न करो

''हज़रत अनस रज़ि अन्हो (अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ) से वर्णन है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा लोगों के लिए सरलता पैदा करो उन के लिए कठिनाईयां पैदा न करो उन को शुभ समाचार दो उन को उदास न करो।''

इस हदीस में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मानव जाति को उपदेश दिया है कि आपस में एक दूसरे के लिए कठिनाईयां पैदा न करो बल्कि आपस में एक दूसरे की सहायता करते रहो और किसी को दुःखी न करो।

अपने भाई की सदैव सहायता करो

हज़रत अनस से वर्णन है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया अपने भाई की सहायता करो चाहे वह अत्याचारी हो चाहे पीड़ित। एक साथी ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल अत्याचारी भाई की सहायता का अर्थ क्या है ? तो आप ने फरमाया उस को उसके अत्याचार से रोको उसको उसके अत्याचार से रोकना ही उसकी सहायता है।''

(सही बुखारी किताबुल मज़ालिम)

मुसलमान कौन है?

हज़रत अब्दुल्लाह (अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ) से वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा मुसलमान वह है जिस की जिह्वा व हाथ से सम्पूर्ण मानवजाति सुरक्षित रहे।

(सही बुखारी किताबुल इमान)

इस छोटे से कथन में तो हमारे प्यारे नबी ने गागर में सागर भर दिया है क्योंकि संसार में जितने भी झगड़े हो रहे हैं उन के पीछे सब से

बड़ा कारण हमारी जीभ है। क्योंकि मुँह से कहे गए शब्द ही प्रेम उत्पन्न कर सकते हैं और मुँह से कहे गए शब्द ही विनाशकारी झगड़े उत्पन्न कर सकते हैं। इसलिए आप ने मुसलमान की परिभाषा ही यह बताई कि वह व्यक्ति जो अपने हाथ से अथवा अपनी वाणी से किसी को दु:ख न पहुँचाए वही सच्चा मुसलमान है।

मुसलमान, मुसलमान पर अत्याचार नहीं करता

हज़रत इब्ने उमर से वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा मुसलमान मुसलमान का भाई है वह उस पर अत्याचार नहीं करता और न ही उसे कभी अकेला छोड़ता है। जो व्यक्ति अपने भाई की आवश्यकताओं का पूरा करने में लगा रहता है अल्लाह तआला उसकी आवश्यकताओं को पूर्ण करता है जिसने किसी मुसलमान को दु:ख दूर किया अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी मुसीबतों में से एक मुसीबत दूर कर देगा। और जो व्यक्ति किसी के दोष छुपाएगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके दोष छुपाएगा।''

(रियाज़ुस्सालेहीन,)

दोष छुपाने से तात्पर्य यह है कि संसार में बहुत से ऐसे मूर्ख लोग हैं कि वह अगर किसी में कोई दोष देखते हैं तो उसको प्रत्येक को बताने की कोशिश करते हैं इस से उस व्यक्ति की निन्दा भी होती है और उसको दु:ख पहुँचता है इसलिए अल्लाह के नबी ने कहा है कि किसी व्यक्ति के दोष को देख कर उसे सबके सामने प्रकट न करो।

सच्चे मुसलमान आपस में एक शरीर की तरह हैं

हज़रत आमिर (अल्लाह उन से प्रसन्न हुआ) करते हैं कि मैंने नुअमान रज़ि को यह कहते सुना कि अल्लाह के रसूल ने कहा।

''तू सच्चे मुसलमानों को आपसी प्रेम, कृपा व दयालुता में एक शरीर की तरह देखेगा जब शरीर का एक हिस्सा बीमार होता है तो उसका सारा शरीर उस बिमारी की पीड़ा को सहन करता है।'' अथवा सारे शरीर को दु:ख व पीड़ा का अनुभव होता है।

(सही बुखारी किताबुल अदब)

अर्थात सच्चा मुसलमान उसी को कह सकते हैं कि जब वह किसी व्यक्ति को दु:ख व मुसीबत में देखे तो उसके हृदय में भी दु:ख व पीड़ा हो और वह उसकी सहायता करके उसके दु:ख को दूर करे। अर्थात हमें सम्पूर्ण मानवजाति के दु:ख व पीड़ा का अनुभव ऐसे ही होना चाहिए जैसे कि सम्पूर्ण शरीर को उसके किसी एक अंग की पीड़ा का अनुभव होता है।

किसी भी कौम के प्रतिष्ठित व्यक्तियों का सम्मान करो।

''हज़रत अब्दुल्लाह (उम्र के पुत्र) से वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि

Asifbhai Mansoori 9998926311
Sabbirbhai 9925900467
LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

Your's
CAR SEAT COVER

Mfg. All Type of Car Seat Cover
E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar
Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043

वसल्लम ने फरमाया कि जब किसी कौम का स्वामी अथवा कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति तुम्हारे पास आए तो उसका पूर्ण रूप से आदर सत्कार करो।'' (इब्ने माजा बाबुल अदब)

जान पहचान हो या न हो सलाम करो।

हज़रत अब्दुल्लाह (उम्र के पुत्र) से वर्णन है कि एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित दुआ और प्रश्न किया कि हे अल्लाह के रसूल कौन सा इस्लाम श्रेष्ठ है (इस्लाम में कौन सा कार्य श्रेष्ठ है) आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा (भूखों को) भोजन करवाना और प्रत्येक मिलने वाले को सलाम कहना चाहे वह जान पहचान का हो चाहे अजनबी हो।

(सही बुखारी, बाबुल सलाम)

क़यामत के दिन सर्वाधिक प्रिय व्यक्ति

हज़रत अबू सईद रज़ि से वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा क़यामत के दिन अल्लाह तआला को सर्वाधिक प्रिय और अल्लाह के सर्वाधिक निकट वह शासक (अधिकारी) होगा जो न्यायप्रिय हो और सर्वाधिक अप्रिय, अत्याचारी शासक (अधिकारी) होगा।'' (तिरमज़ी बाब फिल इमामुल आदिल) अर्थात वह व्यक्ति जो उच्च पद पर है और अपने-अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए लोगों में न्यायपूर्ण कार्य करता है वह अल्लाह को सर्वाधिक प्रिय है। और जो व्यक्ति लोंगों पर अत्याचार व अन्याय करता है वह ख़ुदा से दूर होगा।

शान्ति स्थापना के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश

जिस तरह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्पूर्ण जीवन चरित्र हमें शान्ति व मैत्री और भाईचारे के पथ पर चलने को अग्रसर करता है उसी तरह आपके सच्चे दास और इस युग के इमाम महदी अलैहिस्सलाम ने भी अपने सम्पूर्ण जीवन को धर्म व मानवता के लिए अर्पित कर दिया। आप अलैहिस्सलाम ने भी अपनी पुस्तकों, भाषणों और लेखों के द्वारा संसार को शान्ति की तरफ बुलाया। शान्ति व मैत्रता स्थापना हेतु आपने एक पुस्तक भी लिखी जिसका नाम पैग़ाम-ए-सुलह (मैत्री सन्देश) है आपकी इन्हीं चेष्टाओं के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।

जमाअत की स्थापना का उद्देश्य

''आप अलैहिस्सलाम जमाअत अहमदिया की स्थापना का उद्देश्य बताते हुए फरमाते हैं कि ''इस सिलसिले (जमाअत) की स्थापना का मुख्य उद्देश्य यह है कि लोग संसार के गंद से निकलें और सही पवित्रता प्राप्त करें और फरिश्तों जैसा जीवन व्यतीत करें।''

(मल्फूज़ात, भाग 4, पृ. 473, प्रकाशन रब्वा)

आपसी सहानुभूति

आप फरमाते हैं कि ''सारे अवतारों के आने का मुख्य व सांझी उद्देश्य यही है कि सच्चा प्रेम स्थापित किया जाए और मानवता व भाईचारे के अधिकारों और प्रेम में एक विशेष रंग उत्पन्न किया जाए। जब तक यह सब न होगा सारे बातें केवल रीति रिवाज जैसे होंगे।''

(मल्फूज़ात, भाग 2, पृ. 67, प्रकाशन रब्वा)

प्रेम व दयालुता की शिक्षा

आप मानवजाति को प्रेम, उपकार व दयालुता की शिक्षा देते हुए लिखते हैं कि ''तुम ख़ुदा की उपासना करो और उसकी उपासना में किसी को भागीदार न बनाओ (ख़ुदा को छोड़ कर किसी और की पूजा न करो - अनुवादक) और अपने

माता-पिता पर उपकार करो और जो तुम्हारे प्रियजन हैं उनसे भी दयालुता का व्यवहार करो (इस पंक्ति में संतान और भाई और निकट व दूर के सारे प्रियजन शामिल हैं) और फिर कहा कि अनाथों पर भी उपकार हो और ऐसे भी जो अजनबी हों और पड़ोसियों ऐसे मित्रों पर भी जो किसी कार्य में (तुम्हारे साथ) शामिल हों और उन लोगों पर भी जो यात्री हैं और उन सम्पूर्ण प्राणियों पर जो तुम्हारे अधीन में हैं सब के साथ दयालुता का व्यवहार करो (इस पंक्ति में संतान और भाई और निकट व दूर के सारे प्रियजन शामिल हैं) और फिर कहा कि अनाथों पर भी उपकार करो और गरीबों के साथ भी और ऐसे पड़ोसियों पर भी जो निकटतम हो और ऐसे भी जो अजनबी हों और ऐसे मित्रों पर भी जो किसी कार्य में (तुम्हारे साथ) शामिल हों और उन लोगों पर भी जो यात्री हैं और उन सम्पूर्ण प्राणियों पर जो तुम्हारे अधीन हैं सब के साथ दयालुता का व्यवहार करो। ख़ुदा ऐसे व्यक्ति को मित्र नहीं बनाता जो घमण्डी है और ढींगें हांकने वाला है जो दूसरों पर कृपा नहीं करता।''

(चश्मा मअरफत, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 23, पृ. 208-209)

अपनी चारित्रिक अवस्थाओं को बहुत पवित्र करो

मनुष्य की उन्नति में उसके चरित्र का बहुत बड़ा हाथ होता है इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलै. चारित्रिक अवस्थाओं के बारे में फर्माते हैं कि :-

हे प्यारो ! तुम ने वह समय पाया है जिस का शुभ समाचार सारे अवतारों ने दिया है और इस व्यक्ति अर्थात मसीह मौऊद को तुमने देख लिया है जिसको देखने के लिए बहुत से अवतारों की इच्छा थी इसलिए अब अपने इमानों को अच्छी तरह दृढ़ करो और अपने रास्ते सही करो अपने हृदयों को पवित्र करो और अपने ख़ुदा को प्रसन्न करो। ...अत: सचेत हो जाओ इस आपत्तियों से भरे हुए युग का विष तुम्हें प्रभावित न कर दे। अपनी चारित्रिक अवस्थाओं को बहुत पवित्र करो द्वेष, घृणा और घमण्ड से पवित्र हो जाओ और चारित्रिक चमत्कार संसार को दिखाओ।''

(अरबईन नं. 4, रूहानी ख़ज़ाईन, भाग 17, पृ. 442-43)

लड़ाई झगड़े मत करो

आप फर्माते हैं :-

''तुम ख़ुदा तआला द्वारा स्थापित किए हुए सिलसिले में शामिल हुए हो। उन से लड़ाई झगड़े मत करो बल्कि उनके लिए दुआ करो कि अल्लाह तआला ने अपनी कृपा से जो ज्ञान व दृष्टि तुम्हें दी है अल्लाह तआला उन्हें भी दे तुम

अपने पवित्र आदर्शों से प्रमाणित कर दो कि तुम ने सही रास्ता चुना है... मैं तुम्हें उपदेश देता हूँ कि प्रत्येक प्रकार की लड़ाई व झगड़ों के स्थानों से दूर रहो और गालियाँ सुन कर भी धैर्य रखो बुराई का उत्तर अच्छाई से दो और अगर तुम्हारे साथ कोई झगड़ा करने को तैयार हो जाए तो अच्छा है कि उस स्थान से किसी तरह एक तरफ हो जाओ और विनम्रता से उत्तर दो।

जब मैं सुनता हूँ कि कोई व्यक्ति इस जमाअत में शामिल हो कर किसी से लड़ाई कर रहा है तो मैं इस रास्ते को अच्छा नहीं समझता और ख़ुदा तआला भी नहीं चाहता कि वह जमाअत जो संसार में एक आदर्श बनेगी वह ऐसे रास्ते पर चले जो संयम का रास्ता नहीं है... अगर कोई व्यक्ति इस जमाअत में शामिल हो कर धैर्य और सहनशीलता से कार्य नहीं करता है तो याद रखो कि वह इस जमाअत में शामिल ही नहीं।''

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पृ 157, प्रकाशन रब्वा)

अत: यह वह इस्लामी शिक्षा है जिस की कुछ उदाहरणों का उल्लेख मैंने किया है अगर प्रत्येक व्यक्ति इन शिक्षाओं का अनुसरण करे और धर्म, जात-पात, रंग व बड़े छोटे के भेदभाव को त्याग दे और सम्पूर्ण सृष्टि से प्रेम व भाईचारे का व्यवहार करे तो यह सम्भव है कि संसार में प्रेम व शान्ति की स्थापना हो। अत: आज के कलयुगी समय में इन शिक्षाओं का अनुसरण करना अति आवश्यक है। अल्लाह तआला हम सब को इन शिक्षाओं का अनुसरण करने की क्षमता प्रदान करे। (अल्लाहुम्मा आमीन)

☆ ☆ ☆

जब वसीयत का निज़ाम पूर्ण होगा

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी फरमाते हैं कि

जब वसीयत का निज़ाम पूर्ण होगा तो इस से केवल तब्लीग़ ही न होगी बल्कि इस्लाम की इच्छा के अनुसार हर एक आदमी की ज़रूरत को इस से पूरा किया जाएगा और हर दु:ख और तकलीफ को दुनिया से मिटा दिया जाएगा। इनशा अल्लाह तआला। अनाथ भीख न मांगेगा। विधवा किसी के आगे हाथ न फैलाएगी। बे सामान परेशान न फिरेगा। क्योंकि वसीयत बच्चों की मां होगी, जवानों की बाप होगी, औरतों का सुहाग होगी और अत्याचार के बिना मुहब्बत और और दिली जोश के साथ भाई भाई की इस के द्वारा मदद करेगा।और इस का देना बिना बदला के न होगा बल्कि हर देने वाला ख़ुदा तआला से बेहतर बदला पाएगा। न अमीर घाटे में रहेगा, न क़ौम क़ौम से लड़ेगी बल्कि इस का इहसान सब दुनिया पर फैला होगा।

(निज़ामे नौ पृष्ठ 130)

किया आप ख़ुत्बा जुम्अ: लाईव सुनते हैं?

प्रत्येक अहमदी को समय के ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़ुत्बा जुम्अ: मस्जिदों में जा कर सुनना चाहिए और हुज़ूर की हिदायतों पर बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए। यह ख़ुत्बा जुम्अ: भारतीय समय के अनुसार शाम 6:30 पर प्रत्येक शुक्रवार के दिन मुस्लिम टेलीवीज़न अहमदिया पर सीधा प्रसारित होता है।

☆ ☆ ☆

लाहे-अमल अर्थात ख़ुद्दामुल अहमदिया का कार्यक्रम

और हर एक के लिए एक लक्ष्य है जिसकी ओर वह ध्यान देता है ।
अत: नेक कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ जाओ। (अल्-बक़र: 149)

अनुवादक- शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री **(भाग-4)**

तरबियत (प्रशिक्षण) विभाग

(नए बैअत करने वालों के लिए)

ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान की मज्लिसे शूरा (परामर्श समिति) की 1995 ई. की सिफ़ारिश को मंज़ूरी देते हुए साल 1995-96 ई. से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह ने दया दृष्टि करते हुए ख़ुद्दामुल अहमदिया पाकिस्तान में ऊपर लिखे विभाग की मंज़ूरी प्रदान की थी ।

हिन्दुस्तान में साल 2001-02 ई. से यह विभाग जारी हुआ और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह तआला ने दया-दृष्टि करते हुए नई बैअत करने वालों के प्रशिक्षण के लिए मुहतमिम तरबियत (प्रशिक्षण) की स्वीकृति प्रदान की तथा इस विभाग के संबंध में 10, अक्टूबर 2003 ई. को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ओर से निम्नलिखित सैद्धान्तिक निर्देश प्राप्त हुआ :-

"आप की मज्लिसे आमिला (कार्यकारिणी समिति) में बाद में एक नया विभाग "मुहतमिम प्रशिक्षण" नए बैअत कर्ताओं हेतु स्थापित कर रहा हूँ। यह एक पूर्ण विभाग होगा और इस विभाग का इन्चार्ज/क़ाइद मुहतमिम भी "मज्लिसे आमिला के नियमित सदस्य होंगे तथा इस प्रकार से मज्लिसे शूरा के भी सदस्य होंगे ।

मज्लिसे आमिला में भविष्य में दो सहायक सदर रखे जा सकेंगे और ख़लीफ़तुल मसीह से उनकी स्वीकृति लेना आवश्यक होगी । वे भी आमिला के नियमित सदस्य होंगे तथा इसी दृष्टि से शूरा के अवसर पर भी वे प्रतिनिधि होंगे ।"

इस विभाग की स्थापना का उद्देश्य नए बैअत कर्ता ख़ुद्दाम और अत्फ़ाल की ऐसी उत्तम शिक्षा दीक्षा करना है कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्थापित किए सिलसिला अहमदिया की प्रतिष्ठा के यथायोग्य कर्मठ और वफ़ादार ख़ुद्दाम बन सकें तथा इस बारे में निम्नलिखित बातें विशेष तौर पर दृष्टिगत रखी जाएं :-

1. अधिक से अधिक नए बैअत कर्ताओं को जलसा सालाना, समारोहों, प्रशिक्षण कैम्प इत्यादि के अवसरों पर पवित्र स्थानों के दर्शनार्थ क़ादियान दारुलअमान में लाया जाए ।

2. ख़ुद्दाम तथा अत्फ़ाल की आयु के समस्त नए बैअत कर्ताओं को शीघ्र ही स्थानीय नामांकन तथा बजट में सम्मिलित करें ।

3. नई बैअत करने वाले सदस्यों को नियमित रूप से जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने की नसीहत और निरीक्षण करें ।

4. उन्हें नमाज़ जुमा में अनिवार्य तौर पर सम्मिलित करें ।

5.नए बैअत कर्ताओं पर अनिवार्य और ऐच्छिक चन्दों के महत्त्व और बरकतों को स्पष्ट करें तथा आर्थिक कुरबानी में अनिवार्य तौर पर सम्मिलित करें ।

6. नई बैअत करने वालों में हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाहो तआला की सेवा में दुआ के लिए पत्र

लिखने की आदत डालें ।

7.नए बैअत करने वाले ख़ुद्दाम के मध्य मुक़ाबले करवाएं तथा पुरस्कारों के द्वारा उनका उत्साह बढ़ाएं ।

8. उन्हें अपने हर्ष और शोक संबंधी सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजनों में सम्मिलित करें ताकि उन्हें उचित इस्लामी आचरणों का ज्ञान हो ।

9. इस बारे में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और आवश्यक बात यह है कि उन लोगों को एम.टी.ए. के कार्यक्रमों विशेषकर हुज़ूर अय्यदहुल्लाहो तआला के ख़ुत्बा जुमा में अवश्य सम्मिलित करें और इसके लिए उचित प्रबन्ध करके निरन्तर नसीहत और निरीक्षण करें ।

10. इन नए बैअत करने वालों को ख़ुदा की ओर बुलाने वाला (दाई इलल्लाह) बनाएं क्योंकि वे अपने सुधार के साथ-साथ अपने खानदानों और अपनी मित्र मंडली में प्रभावशाली बुलाने वाले सिद्ध हो सकते हैं ।

11. नए बैअत करने वाले ख़ुद्दाम और अत्फ़ाल की मज्लिसें प्रान्त/मंडल के स्तर पर अलग समारोह करवाएं जिनके सम्पूर्ण प्रबन्ध नए बैअत करने वाले ख़ुद्दाम और अत्फ़ाल के ही सुपुर्द करें ।

तब्लीग़ (प्रचार) विभाग

अल्लाह तआला फरमाता है :-

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ وَالْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ وَجَادِلْھُمْ بِالَّتِیْ ھِیَ اَحْسَنُ اِنَّ رَبَّکَ ھُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِیْلِہٖ وَھُوَ اَعْلَمُ بِا لْمُھْتَدِیْنَ

(अन्नहल : 126)

अनुवाद :- ""अपने प्रतिपालक के मार्ग की ओर नीति और अच्छी नसीहत से लोगों को बुला ।" के अनुसार अल्लाह तआला का सन्देश दूसरों तक पहुँचाना हर सच्चे मुसलमान का कर्त्तव्य है जब कि प्रत्येक अहमदी पर यह बहुत अधिक दायित्व आता है कि वह इस्लाम का वास्तविक तब्लीग़क हो । हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहिमहुल्लाह तआला ने जमाअत के प्रत्येक सदस्य को ख़ुदा की ओर बुलाने वाला बनने की बारम्बार नसीहत की है। इसी प्रकार हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने भी ख़ुदा की ओर निमंत्रण देने की ओर विशेष तौर पर ध्यानाकर्षण किया है ।

इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित बातों को विशेष तौर पर दृष्टिगत रखते हुए ख़ुदा की ओर बुलाने के लिए ध्यान दें :-

1. साल के मध्य दोनों छ: महीनों में दो तब्लीग़ सप्ताह आयोजित किए जाएं ।

2. प्रश्नोत्तर की बैठकों का आयोजन करके जमाअत के अलावा लोगों को निमंत्रण दिया जाए। इस सन्दर्भ में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रह. की प्रश्नोत्तर की मज्लिसों पर आधारित कैसिट्स, सीडी तथा एम.टी.ए. के कार्यक्रमों से भी बहुत लाभ प्राप्त किया जा सकता है ।

3. प्रत्येक मज्लिस तब्लीग़ क्लासिज़ का आयोजन करे जिसमें ख़ुद्दाम को ख़ुदा की ओर बुलाने के

Is Allah not sufficient for His servant

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

JANATA
STONE CRUSHING INDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone. Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

उपाय तथा जमाअत के नियम और आस्थाओं के सबूत और दलीलें सिखाए जाएं ।

4. व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर सम्पर्क, मेल-मिलाप, तब्लीग़ संबंधी पत्रों और लेखों के माध्यम से तब्लीग़ किया जाए ।

5. तब्लीग़ संबंधी सभाएं करें ।

6. लिट्रेचर, पम्फलट और फोल्डर वितरित किए जाएं ।

7. लाइब्रेरियों में जमाअती पुस्तकें, समाचार पत्र, और पत्रिकाएं रखवाएं ।

8. मीडिया से सम्पर्क रखें ताकि वे अज्ञान होने के कारण अहमदियत अर्थात वास्तविक इस्लाम के बारे में दुर्भावनाएं न फैलाएं । यदि जमाअत के बारे में कोई विज्ञापन, सूचना या पम्फलट इत्यादि प्रकाशित हुआ है तो उस की मूल प्रति या फोटो कापी केन्द्रीय कार्यालय में अवश्य भिजवाएं तथा केन्द्र से स्वीकृति प्राप्त करके उनका उत्तर भी दिया जाए ।

9. जमाअत के नियम, तब्लीग़ और प्रशिक्षण तथा जन-सेवा के कार्यों से जमाअत के लोगों के अलावा अन्य लोगों को परिचित कराएं ।

10. जमाअत के बुक स्टाल लगाएं ।

11. अहमदियत के केन्द्र क़ादियान में समारोहों और जलसों के अवसर पर जमाअत के लोगों के अलावा अन्य लोगों को लाएं ।

12. सामाजिक संबंधों को बढ़ाएं, लोगों को घरों में बुलाएं । कम से कम पांच नए लोगों से सम्पर्क करके जमाअत की आस्थाओं (अक़ायद) और कार्यों से परिचित कराएं ।

13. प्रत्येक मज्लिस साल में एक नए गांव में अहमदियत का पौधा लगाए ।

शिक्षा-विभाग

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उपदेश है कि-"शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मुसलमान पुरुष और स्त्री का कर्तव्य है ।" इस दृष्टि से शिक्षा विभाग का उद्देश्य यह है कि ख़ुद्दाम सांसारिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा के प्रकाश से भी प्रकाशित हों, अशिक्षा पूर्णतया दूर की जाए । प्रत्येक ख़ादिम कम से कम :-

1. इस्लाम धर्म की बुनियादी शिक्षा और आस्थाओं से परिचित हो ।

2. क़ुर्आन करीम देखकर (ज़बानी) पढ़ सकता हो ।

3. नमाज़ अनुवाद सहित जानता हो ।

4. क़ुर्आन करीम का कोई भाग विशेषकर सूरह "बक़रह" की शुरू की सत्रह आयतें और अन्तिम दस सूरह मौखिक याद हों ।

5. जनाज़ा पढ़ने की दुआ तथा अन्य छोटी-छोटी मसनून दुआएं याद हों ।

स्कीम का विवरण

क़ुर्आन करीम

1. ख़ुद्दाम में क़ुर्आन करीम की तिलावत की रुचि उत्पन्न करने का प्रयास किया जाए । इस उद्देश्य के लिए कभी-कभी क़ुर्आन की क़िरअत और क़ुर्आन कंठस्थ करने के मुकाबले कराए जाएं ।

2. ख़ुद्दाम में क़ुर्आन करीम नाज़िर: और अनुवाद सहित सीखने की रुचि उत्पन्न की जाए और नियमित

रूप से क़ुर्आनी शिक्षा की क्लासें लगाई जाएं, उचित तौर पर क़ुर्आन करीम सीखने के लिए स्थानीय तब्लीग़ाकों, शिक्षकों तथा उचित उच्चारण जानने वाले लोगों से लाभ प्राप्त करें। इस बारे में प्रत्येक मज्लिस में नज़ारत तालीमुल क़ुर्आन वक़्फ़े आरज़ी क़ादियान से क़ुर्आन करीम के उच्चारण की आडियो कैसिट और सी.डी. मंगवाई जा सकती हैं और एम.टी.ए. पर शुद्धता के साथ क़ुर्आन सिखाने वाले कार्यक्रमों से लाभ उठाया जाए ।

3. जो ख़ुद्दाम क़ुर्आन करीम अनुवाद सहित जानते हैं उन्हें तफ़्सीर (व्याख्या) के अध्ययन की प्रेरणा दी जाए ।

4. प्रत्येक मज्लिस में नियमित रूप से क़ुर्आन करीम के सुनाने का प्रबन्ध किया जाए ।

नमाज़

जो ख़ुद्दाम नमाज़ अनुवाद सहित या अनुवाद रहित न जानते हों उन्हें सिखाने का नियमित प्रबन्ध किया जाए। कोई ख़ादिम ऐसा न रहे जिसे नमाज़ अनुवाद सहित न आती हो । हर माह में एक सप्ताह के लिए ऐसे प्रोग्राम बनाए जाएं जिनमें नमाज़ अनुवाद सहित और दुआएं याद कराने और क़ुर्आन को कंठस्थ (हिफ़्ज़) कराने की ओर विशेष ध्यान दिया जाए तथा मासिक रिपोर्टों में नए सीखने वाले ख़ुद्दाम की संख्या का उल्लेख किया जाए। किताब "तदरीसे नमाज़" जिसमें हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रहिमहुल्लाह तआला ने उर्दू क्लास में नमाज़ की फ़लास्फ़ी और उसकी नीति पर प्रकाश डाला है से भी लाभ उठाया जा सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों का अध्ययन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों के अध्ययन का महत्व ख़ादिम पर स्पष्ट किया जाए। मज्लिसे आमिला तथा पदाधिकारी किताबों के अध्ययन के बारे में ख़ुद्दाम के सामने अपना व्यक्तिगत आदर्श प्रस्तुत करें । मासिक अध्ययन के लिए जो किताबें "मुहतमिम तालीम" की ओर से निर्धारित की जाती हैं ख़ुद्दाम उनका अध्ययन करें और प्रत्येक माह के अन्त में ख़ुद्दाम का निरीक्षण किया जाए। प्रयास किया जाए कि शत-प्रतिशत (100%) ख़ुद्दाम इस में भाग लें। जो ख़ुद्दाम नियमित रूप से अध्ययन करें उनके नाम

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا بَصِيْرًا ○ (سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

LUCKY BATTERY CENTRE

BATTERY & DIGITAL INVERTER

Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045

e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com

Mob. : 09438352786, 06788221786

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

एक रजिस्टर में लिखें । मज्लिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों पर आधारित लाइब्रेरी बनाई जाए। ख़ुद्दाम अपने-अपने घरों में उन किताबों को पढ़कर सुनाएं ।

प्रत्येक माह के अन्त में निर्धारित किताब पर एक विचार-विमर्श-बैठक का आयोजन किया जाए जिस में किताब का परिचय और मूल विषय प्रस्तुत किया जाए। उचित होगा कि किसी विद्वान (आलिम) और बुज़ुर्ग की सेवाएं प्राप्त की जाएं और ख़ुद्दाम को प्रश्नों का अवसर दिया जाए ताकि ख़ुद्दाम किताब का विषय समझकर मस्तिष्क में बैठा लें। स्थानीय जमाअत के सहयोग से मस्जिद में निर्धारित किताब को सुनाने का प्रबंध किया जाए। किताबों के अध्ययन की स्कीम में "मुहतमिम तालीम" की ओर से भेजे गए सर्कुलर के अनुसार अध्ययन किया जाए।

क़ुर्आन करीम का पूर्ण अनुवाद तथा रूहानी ख़ज़ायन की सम्पूर्ण जिल्दों का अध्ययन करने वाले ख़ुद्दाम को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

मज्लिस अन्सार सुल्तानुलक़लम

ख़ुद्दाम में लेख लिखने की रुचि उत्पन्न करने के लिए ""मज्लिस अन्सार सुल्तानुल क़लम" स्थापित करें ।

इस मज्लिस के अन्तर्गत स्थानीय तौर पर लेख लिखने के मुकाबले कराए जाएं और प्रत्येक ख़ादिम इसमें भाग ले तथा अच्छे और ऊँचे स्तर के लेख केन्द्रीय अखबार, पत्रिकाओं, बद्र, मिश्कात् और "राहे-ईमान" इत्यादि में प्रकाशित करने के लिए शिक्षा विभाग के द्वारा भिजवाए जाएं। केन्द्रीय मज्लिस की ओर से प्रत्येक साल एक मक़ाला लेखन का इनामी मुकाबला रखा जाता है जिस में प्रत्येक मज्लिस के कम से कम एक ख़ादिम का भाग लेना आवश्यक है । इस मुक़ाबले में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले ख़ुद्दाम को केन्द्रीय सालाना समारोह के अवसर पर इनाम दिया जाता है । प्रचलित साल के लिए "मुहतमिम तालीम" की ओर से भेजे गए सरकुलर में निर्धारित शीर्षक तथा तिथि की पाबन्दी करें ।

मज्लिस सवाल जवाब प्रशिक्षण

ख़ुद्दाम में वर्णन करने की शक्ति को विकसित करने के लिए मज्लिस से "मज्लिस-ए-सम्भाषण" स्थापित करें और प्रत्येक माह उस की सभा आयोजित करके ख़ुद्दाम को भाषण देने का अवसर दिया जाए। प्रयास किया जाए कि साल भर में प्रत्येक ख़ादिम कम से कम एक बार भाषण अवश्य दे ।

दैनिक या साप्ताहिक शिक्षा संबंधी क्लास

प्रत्येक मज्लिस प्रयास करके अपने यहां दैनिक

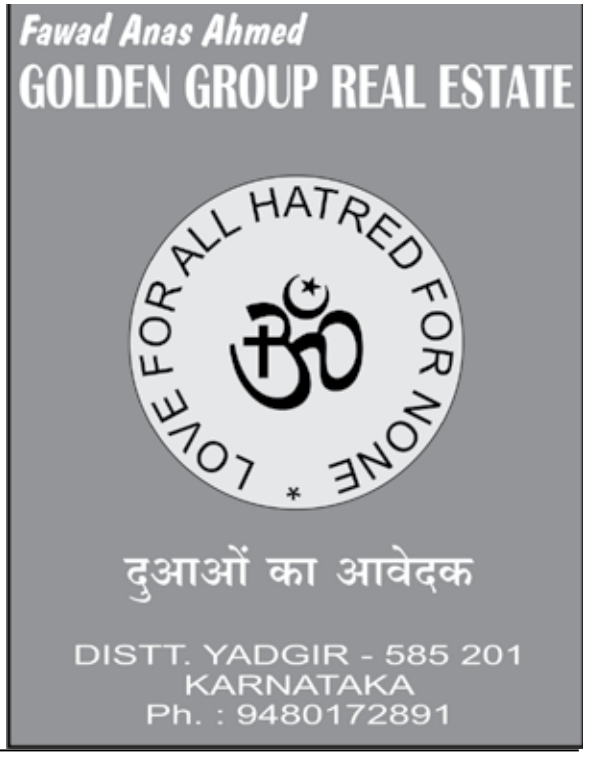

या साप्ताहिक शिक्षा संबंधी क्लास की व्यवस्था करे जिसमें नियमित रूप से नमाज़ अनुवाद सहित, अरबी उर्दू सिखाना और अनपढ़ ख़ुद्दाम की शिक्षा की व्यवस्था की जाए, अनपढ़ ख़ुद्दाम की पूर्ण सूची तैयार करके व्यवस्थित तौर पर उनकी शिक्षा के बारे में प्रयत्न किया जाए, प्रत्येक अनपढ़ को कम से कम अपने हस्ताक्षर करने और साधारण लिखना-पढ़ना अवश्य सिखाया जाए । अनपढ़ या कम शिक्षित ख़ुद्दाम को अच्छे शिक्षित ख़ुद्दाम के सुपुर्द कर दिया जाए जो उनकी परिस्थितियों के अनुकूल उचित शिक्षा दें ।

लायब्रेरी

मज्लिसें कोशिश करें कि उनके यहां दारुल मुतालिआ ज़रूर स्थापित किया जाए। बड़ी-बड़ी मज्लिसें अपने यहां लाइब्रेरी स्थापित करके उसमें लाभप्रद किताबों को बढ़ाती रहें। इस बात का निरीक्षण किया जाए कि ख़ुद्दाम इससे पूरा लाभ भी प्राप्त करें।

धार्मिक पाठ्यक्रम की परीक्षाएं

ख़ुद्दाम के धार्मिक ज्ञान के स्तर को ऊंचा करने के लिए धार्मिक पाठ्यक्रम को दो ग्रुप्स में निर्धारित किया गया है :-

(1) प्रथम ग्रुप :- 15 से 25 साल के ख़ुद्दाम के लिए।

(2) द्वितीय ग्रुप :- 26 से 40 साल के ख़ुद्दाम के लिए ।

नोट :- हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह तआला के आदेशानुसार धार्मिक पाठ्यक्रम की परीक्षा साल में तीन बार ली जाएगी। "मुहतमिम तालीम" की ओर से प्रत्येक ग्रुप का पाठ्यक्रम अलग-अलग भिजवाया जाएगा, ख़ुद्दाम उसके अनुसार अपने-अपने ग्रुप की तैयारी करके परीक्षा दें ।

आदरणीय क़ाइदीन से विनती है कि साल के आरंभ से ही ख़ुद्दाम को इन परीक्षाओं के लिए तैयार करें और विशेष तौर पर ध्यान रखें कि प्रत्येक ख़ादिम परीक्षा में भाग ले और समस्त पदाधिकारियों का भी इस परीक्षा में सम्मिलित होना आवश्यक होगा और जो पदाधिकारी इन परीक्षाओं में भाग नहीं लेंगे उनकी रिपोर्ट केन्द्र को करें । सफल होने वाले ख़ुद्दाम को केन्द्रीय कार्यालय से प्रमाण-पत्र दिए जाएंगे ।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Prop. Yasin Khan (Asin)
M : +91 92532-00786
+91 99964-74040
+91 99969-92626
email : yyykhan@gmail.com
www.facebook.com/saloniboutique

Saloni Hand & Machine Embroidery
&
Adil Lace House

Prop. Yasmeen Khan (Jarina)
M : +91 98966-81888

PEACE FOR ALL
LOVE HATRED NONE

She ADL

Specialist in :
Hand Embroidery & MachineEmroidery on suit,
Lehangas, Punjabi Suit, Chuni, Fancy Dupatta

हमारे यहाँ पर Emboidery वर्क, हाथ व मशीन की कढ़ाई, कढ़ाई सूट,
फैन्सी दुपट्टे, प्लेन फैबरिक व फैन्सी लैस आदि तैयार मिलती हैं।

गुल्दस्ता

नए साल की दुआ

अबदुल्लाह बिन हश्शाम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम्म इस दुआ को इस तरह सीखते थे जैसे कुरआन सीखते थे। और जब महीना या साल शुरू होता तो कहते थे।

''अल्लाहुम्मा अद्ख़िलहो अलैना बिल्अम्ने वल् ईमाने वस्सलामते वल् इस्लामे वजारिन मिनश्शैताने व रिज़वानुम मिनर रहमाने।''

अर्थात् हे अल्लाह! अस साल को हमारे ऊपर अमन और ईमान और सलामती और इस्लाम के साथ और शैतान से बचाओ और रहमान की रज़ामन्दी के साथ दाख़िल फरमा।

दुआ लटकी रहती है

हज़रत उमर फरमाते हैं कि जब तक दुआ करने वाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद नहीम भेजता उस की दुआ ज़मीन और आंसमान के बीच में लटकी हुई रहती है और उस का कोई हिस्सा भी ख़ुदा के हुज़ूर पेश होने के लिए ऊपर नहीं जाता

(जामिए तर्मिज़ी किताबुस्सलात हदीस नम्बर 448)

नया साल

मुबारक सिद्दीकी

ख़ुदा करे कि हर किसी को राहतें नसीब हों
मुहब्बतों की दौलतें, रफाकतें नसीब हों।।
ख़ुदा करे कि हर किसी की ज़िन्दगी गुलाब हो
यहां भी कामरान हो वहां भी कामयाब हो।।
ख़ुदा करे कि मुसाफिरों को हर घड़ी अमान हो
जहां भी धूप हो कड़ी वहां पे सायबान हो।।
ख़ुदा करे कि बेटियों को नेक हम सफर मिलें
सदा सुखी रहें जहां वह शादमान घर मिलें।।
ख़ुदा करे कि गली गली में रहमतों के नुज़ूल मिलें
जहा जहां भी खार हैं वहां वहां पे फूल हों।।
ख़ुदा करे कि मेरे वतन की रौनकें बहाल हों
उजाड़ते हैं जो उसे वह हाथ पायमाल हो।।
ख़ुदा करे कि कि शर पसन्द लोग हम से दूर हों
हों आसपास बस वही जो बाअसे सुरूर हों।।
ख़ुदा करे कि कि दर्द से कोई न बेकरार हो
मरीज़ को तबीब का कोई न इन्तज़ार न है।।
ख़ुदा करे कि वफाओं का हर एक को सिला मिले
कोई अगर ग़ज़ल कहे तो दाद बेपनाह मिले।।

नया साल

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़

ए नए साल बता तुझ में नयापन किया है।
हर तरफ ख़लक ने क्यों शोर मचा रखा है।।
रौशनी दिन की वही तारों भरी रात वही।
आज हम को नज़र आती है हर इक बात वही।।
आसमान बदला है अफसोस, न बदली है ज़मीं।
एक हिन्दसे का बदलना कोई जिद्दत तो नहीं।।
अगले बरसों की तरह होंगे करीने तेरे।
किसे मालूम नहीं बारह महीने तेरे।।
तू नया है तो दिखा सुबह नई, शाम नई।
वरना इन आंखों ने देखे हैं नए साल कई।।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि सलाम की एक कहानी

एक दिन हज़रत मीर नासिर नवाब साहब रज़ि ने हजरत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि सलाम द्वारा वर्णित की गई निम्नलिखित हक़ायत (कहानी) सुनाई:

हजरत दाऊद अलैहि सलाम के ज़माने की बात है। एक दरवेश जो अल्लाह की इबादत करता था। एक दिन जब वह खुदा की इबादत में व्यस्त था, उसके दिल में यह इच्छा पैदा हुई ,कि गोश्त खाया जाय। अत: जब यह इच्छा अत्यधिक बढ़ गई , तो एक जानवर जो उस के कमरे में भीतर स्वयं ही आ गया और उसके भीतर आने के साथ ही उसके दिल में यह विचार आया कि यह जानवर अल्लाह तआला की तरफ से मेरी इच्छा अनुसार यहां आया है। उसने उस को ज़िबह किया , ताकि उसका गोश्त खाकर अपनी इच्छा पूरी कर ले। अभी ज़िबह किया ही था, एक आदमी आ पहुंचा और कहने लगा, यह मेरा बछड़ा था, जिसको तूने चोरी कर के ज़िबह कर दिया है। अत: मैं तेरे विरूद्ध अदालत में केस चलाऊंगा और उस व्यक्ति ने हजरत दाऊद अलैहि सलाम की अदालत में केस दर्ज किया। जब हज़रत दाऊद अलैहि सलाम ने उस दरवेश आदमी से पूछा कि इस आदमी ने जो तुम पर आरोप लगाया है। क्या, यह सही है। तो उस दरवेश ने कहा कि मेरे पिता जब मैं छोटी आयु का था, व्यापार के लिए किसी देश में गया। इस के बाद मैं युवा हुआ लम्बा समय बीत गया। मैंने शिक्षा प्राप्त की और कुछ भक्तों के साथ समय बिताया। और अकेला रहने लगा। इसी समय जब कि मैं इबादत कर रहा था, मेरे दिल में गोश्त खाने कि इच्छा उत्पन्न हुई। इच्छा के होते ही एक गाय का बछड़ा मेरे कमरे में आ गया। मैंने यही समझा कि अल्लाह तआला ने मेरी इच्छा को पूरा करने के लिए यह जानवर मेरे कमरे में भेज दिया है। इसलिए मैंने इसे ज़िबह कर लिया। यह आदमी आ गया, और गुस्से में बोला कि तूने मेरा जानवर चोरी किया है। और फिर ज़िबह कर लिया है। इसीलिए उसने मुझे आरोपी कहा है। अब जो फैसला अदालत करना चाहे कर सकती है।

हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम पर उस आदमी की पवित्रता और इबादत वाली हालत का विशेष प्रभाव हुआ। आप ने फरमाया कि अच्छा इस समय जाओ, और उस तारीख़ को दोनो हाज़िर हो जाना ताकि फैसला कर दिया जाए। जब वह दोनो चले गए, तो हजरत दाऊद अलैहि सलाम ने अल्लाह तआला से बहुत दुआंऐं कि, हे मेरे ख़ुदा मैं हरगिज़ पसन्द नहीं करता कि मेरी अदालत से कुछ ऐसा फैसला हो जिस से ज़ुल्म हो जाए। तू इस मुकद्दमा में मेरा मार्गदर्शन कर और मुझे जो भी वास्तविकता है बता दे। जब हजरत दाऊद अलैहि सलाम ने बहुत दुआऐं कि तो अल्लाह तआला की तरफ से बताया गया कि जो कुछ दरवेश ने बताया वह बिल्कुल सही है। और इबादत की हालत में उस दरवेश के दिल में यह इच्छा हम ने उत्पन्न कि थी। और गाय का बछड़ा भी हमारे आदेश से उसके कमरे तक लाया गया था। और फिर उसका ज़िबह किया जाना भी हमारी ही इच्छा अनुसार हुआ। यह सारी धारणा हमारी इच्छा अनुसार हुई और सच्चाई यह है कि इस दरवेश का पिता जो बड़ा व्यापारी था,लम्बे समय तक व्यापार करता रहा और उसने लाखों रूपए और कई भेड़,बकरीयों,गायों के कई झुण्ड वह मालिक था। वह वापस अपने देश को आ रहा

था। और यह व्यक्ति जिस ने केस किया है,नमक हराम उस दरवेश के पिता का नौकर था। जब वह व्यापारी अपने शहर के निकट मैदान में ठहरा और रात को सोया तो उस नमक हराम नौकर ने अपने चाकू से जिसके ऊपर उसका नाम भी लिखा है,उस व्यापारी कि हत्या कर दी और उस मैदान के एक कोने में साधारण सा गढ़ा खोदकर उस में घसीटकर डाल दिया और उस पर मिट्टी डाल कर दफन कर दिया।

अत: हजरत दाऊद अलैहि सलाम ने कश्फ (अध्यात्मिक ख़वाब) द्वारा वह स्थान एवं कब्र और ख़ून से लथपथ कपड़ों में लिपटा हुआ चाकू भी देख लिया।और अल्लाह ने बताया कि हम ने यह सब इस लिए किया ताकि उस हत्यारे के पास जो भी धन दौलत है ,एवं जानवर हैं यह सब दरवेश को जो कि सच्चा व्यापारी का बेटा है। और वास्तविक उत्ताधिकारी है। उसे दिलाया जाए। और जो हत्यारा है ,उसकी न्याय के रूप में हत्या की जाए।

नेकी का बदला

"दुनिया नश्वर है जो इस दुनिया में आया वह आख़िर में अल्लाह के सामने होगा।"

पुराने ज़माने की बात है कि किसी देश पर कोई राजा हुकूमत करता था। वह बहुत अभिमानी और अन्यायपूर्ण था। अपने ख़ज़ाने में पैसे भर्ता रहता और ग़रीबों को एक पैसा नहीं देता। एक दिन उसके महल के सामने एक फकीर ने आवाज़ लगाई।

"कोई अल्लाह का बंदा है जो मुझे रोटी खिला दे। "

राजा ने फकीर की आवाज़ पर कोई ध्यान न दिया। फकीर देर तक आवाज़ लगाता रहा, लेकिन राजा ने उसकी एक न सुनी। फकीर को बादशाह से कुछ उम्मीद थी बड़ा निराश हुआ और यह कहकर वहां से चल पड़ा कि

"दुनिया में मज़े कर लो आख़िरत में परेशानी उठाओगे।"

रानी भी यह माजर देख रही थी। फकीर की आवाज़ रानी ने भी सुनी। वे जल्दी से अपने दासियों के साथ महल के दरवाज़े तक आई उसने देखा कि फकीर सिर झुकाए कुछ कहता चला जा रहा है रानी ने ध्यान से सुना तो फकीर कह रहा था

"दुनिया फना होने वाली है जो इस में आया वह आख़िर में अल्लाह के सामने हाज़िर होगा। कोई अमीर हो ग़रीब हो सब को जाना होगा। जो दुनिया में अच्छा काम करेगा वह जन्नत में जाएगा जो बुरे काम करेगा ग़रीबों की परवाह नहीं करेगा वह क़यामत के दिन उसका नुकसान उठाना होगा।"

फकीर की इन बातों का रानी दिल पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने फकीर को वापस बुलाया

Prop. Md. Mustafa

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

BHARAT BATTERIES & AUTO ELECTRICALS

Mfrs. of : BHARAT BATTERY & BHARAT PLATES

Spl. in : All kinds of Battery Re-build & All Vehicles Automobiles, Electrical Job work undertaken

Opp. S. B. H., B. B. Road,
Shahpur-585 223, Distt. Yadgir, Karnataka.
Ph : 08479-240269, Cell: 09845924940, 09986253320

और कुछ रोटियाँ मंगवा कर उसे दें। फकीर ने रोटियां लीं और रानी को दुनिया में अच्छे काम करने और जन्नत में जाने की दुआएं देता हुआ विदा हुआ।

उधर राजा भी सारी हालत को देख रहा था। रात हुई राजा अपने महल में जाकर सो गया। उसने ख़वाब में देखा कि एक बहुत सुंदर महल है जिस के चारो सुंदर बाग़ हैं। जन के पेड़ फल और फूलों से लदे हुए हैं। महल में एक सोने का सिंहासन बिछा हुआ है उस सिंहासन पर रानी सुंदर कपड़े पहन कर बैठी हुई है। राजा भी महल में दाख़िल होना चाहता है लेकिन दरबारी उसे यह कहकर रोक देते हैं कि वह इस महल में दाख़िल नहीं हो सकता।

सुबह जब राजा जागा तो उस पर रात के सपने का प्रभाव था। उस ने जल्दी से वुज़ू किया और सुबह नमाज़ के लिए खड़ा हो गया। उसने अल्लाह तआला से दुआ की " हे अल्लाह ! मेरे पिछले गुनाहों को बख्श दे। मैं सच्चे दिल से अपने गुनाहों से तौबा करता हूँ। मैं हमेशा सच्चे दिल से तेरी इबादत करता रहूँगा। अपनी प्रजा का ख्याल रखूंगा। उनका हक उन्हें दूंगा और किसी पर आज के बाद अत्याचार नहीं करूंगा।"

राजा जब नमाज़ पढ़ कर उठा तो वह बदल चुका था। थोड़ी ही देर गुज़री थी कि उसे उसी फकीर की आवाज़ सुनाई दी जो कल आया था। राजा ने उसे बुलाया और मोहरें दीं। फकीर बहुत ख़ुश हुआ और उसे दुआंएँ देता हुआ गया।

राजा अब रोज़ाना नमाज़ें भी पढ़ने लगा और अपनी प्रजा की ज़रूरतों का ख्याल भी रखने लगा। इसका नतीजा यह हुआ कि इस का मुलक तरक्की करने लगा और थोड़े ही समय में उसकी प्रजा ख़शहाल हो गई।

थोड़ा हंस लें

भागदौड़

एक बार जंगल के सभी जानवरों ने फैसला किया कि हम में से भी कोई डॉक्टर होना चाहिए।

बंदर को इस काम के लिए चुना गया और उसे पढ़ाई के लिए भेजा गया। जब वह वापस आया तो लोमड़ी बीमार हो गई। जानवरों ने बंदर को बुलाया और कहा कि लोमड़ी का इलाज करे।

बन्दर इलाज करने जब आया तो वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ और तीसरे पर झूलने लगा और इसी तरह चार चक्कर लगाए इसी दौरान लोमड़ी मर गई। सब जानवरों ने उससे कहा कि तुम्हारी मरीज़ा मर गई। इस पर इस बंदर ने कहा " भागदौड़ तो मैं ने बहुत की है पर कुदरत को यही मंजूर था।"

ठंड का इलाज

डॉक्टर साहब राउंड पर निकले तो एक बिस्तर को खाली देख कर पूछा "इस बिस्तर का मरीज़ कहां है?"

इस मरीज़ को बहुत ठंड लग रही थी मैंने उसे ऐसे रोगी के बराबर में लिटा दिया जिसे 104 बुखार है। नर्स ने जवाब दिया।

गैंडा

एक आदमी वकील के पास गया और कहा जनाब ! मैंने एक आदमी के चेहरे पर मुक्का मार कर उसके दांत तोड़ दिए हैं। उसने मुझ पर मुकदमा कर दिया है। कृपा करके आप मुझे बचाएं।

वकील ने पूछा आप ने मुक्का क्यों मारा ?

उस आदमी ने जवाब दिया उस आदमी ने मुझे एक महीने पहले गैंडा कहा था?

वकील ने हैरान होकर पूछा तो आप ने एक महीने गुज़रने के बाद इसे अब क्यों मारा ?

जी दरअसल मैंने गैंडा आज ही देखा है। उस आदमी ने से जवाब दिया।

रेगिस्तान का जहाज़ : ऊंट

कैमेलस प्रजाति का प्राणी ऊंट अपनी कूबड़ की वजह से पहचाना जाता है। ऊंट की दो प्रजातियां होती हैं पहली एक कूबड़ वाले ऊंट जो अरब में पाए जाते हैं और दूसरे बैक्ट्रियन जिनके दो कूबड़ होते हैं। एक कूबड़ वाले ऊंट पश्चिम एशिया के रेगिस्तानी इलाकों में पाए जाते हैं, जबकि दो कूबड़ वाले ऊंटों का घर मध्य और पूर्वी एशिया है।

दोनों ही प्रजातियां पालतू हैं, जिनका दूध और मांस मनुष्य के लिए उपयोगी है। यह बोझा ढोने का एक प्रमुख साधन भी है। ऊंटों की औसत आयु 40 से 50 वर्ष तक होती है। एक वयस्क ऊंट की ऊंचाई कूबड़ तक 7 फुट के लगभग होती है। यह 65 कि.मी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ भी सकता है।

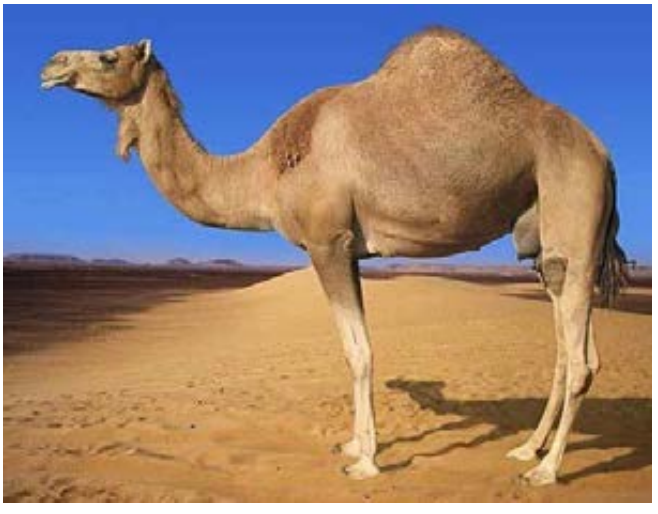

दुनिया में एक कूबड़ वाले सर्वाधिक ऊंट सोमालिया में पाए जाते हैं। यहां के लोगों के लिए यह दूध, भोजन और यातायात का प्रमुख साधन है। बैक्ट्रियन प्रजाति के ऊंट चीन के गोबी रेगिस्तान और मंगोलिया में पाए जाते हैं। भारत में सर्वाधिक ऊंट राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में होते हैं।

सामान्यत: ऐसा माना जाता है कि ऊंट अपने कूबड़ में पानी एकत्रित करते रखता है, परंतु यह गलत धारणा है। दरअसल उसकी कूबड़ में पूरे शरीर की चर्बी समाहित होती है। इस चर्बी से उसे गर्मियों में ऊर्जा मिलती रहती है। इसकी मोटी चमड़ी रेगिस्तानी हवाओं से उसकी रक्षा करती है, जिस कारण वह बिना पानी पिए कई दिनों तक रह सकता है।

ऊंट की रक्त कोशिकाएं अंडाकार होती हैं। यह एक बार में 100-150 लीटर पानी पी लेता है। ऊंट को कभी भी पसीना नहीं आता। पेड़ों की हरी पत्तियां इसका मुख्य भोजन है। इसकी मोटी चमड़ी सूरज की रोशनी को रिफ्लेक्ट करती है। ऊंट के लंबे पैर उसे जमीन की गर्मी से दूरी बनाए रखने में मदद करते हैं।

ऊंट का मुंह बहुत मजबूत होता है। यह रेगिस्तान की कंटीले पेड़ों को भी चबा लेता है। ऊंट की आंखों पर तीन परतें होती हैं और उन पर बने बाल इस तरह होते हैं कि जब रेगिस्तान में रेतीली हवाएं चलती हैं तब भी वे आसानी से देख सकते हैं। रेत उनकी आंखों में नहीं जा पाती। ऊंट के पंजों की बनावट इस तरह होती है कि रेत में चलते वक्त ये अंदर की ओर नहीं धंसते। ऊंटों की किडनी पानी को लंबे समय तक रोके रखने में सक्षम होती है।

ईसा से 1200 वर्ष पूर्व से ऊंटों पर सामान लादकर लाने-ले जाने की प्रथा चल रही है। उसके बाद सैनिकों ने भी ऊंटों का उपयोग अपना सामान लादने के लिए किया। राजस्थान में अजमेर से 14 कि.मी दूर पुष्कर में प्रतिवर्ष पशु मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में ऊंटों की खरीद-फरोख्त होती है।

☆ ☆ ☆

एक दिन आने वाला है जो कादियान सूरज की तरह चमक कर दिखला देगी के वह एक सच्चे का मक़ाम हे।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-18 पृष्ठ-281)

जलसा सालाना कादियान पर भव्य गेट दारुल मसीह एवं खुद्दाम द्वारा सिक्योरिटी का दृश्य।

जलसा गाह की सिक्योरिटी का दृश्य।

अतफ़ाल-उल-अहमदिया के सदस्य तराना प्रस्तुत करते हुए।

खुद्दामुल अहमदिया के सदस्य तराना प्रस्तुत करते हुए।

मेहमानों के प्रति बिस्तरों का प्रबंध किये जाने का दृश्य।

लंगर खाने का एक दृश्य।

Regd. with the registrar of News Papers of India at PUNHI Number 1999/4052
Postal Licence Number GDP/019/2013-15

Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian

RAH-E-IMAN

E-Mail : rahe.imaan@gmail.com

Chairman : Rafiq Ahmad Beig
Editor : Shaikh Mujahid Ahmad Shastri
Manager : Naveed Ahmad Fazal

Mobile : 09915379255
Mobile : 08699357278
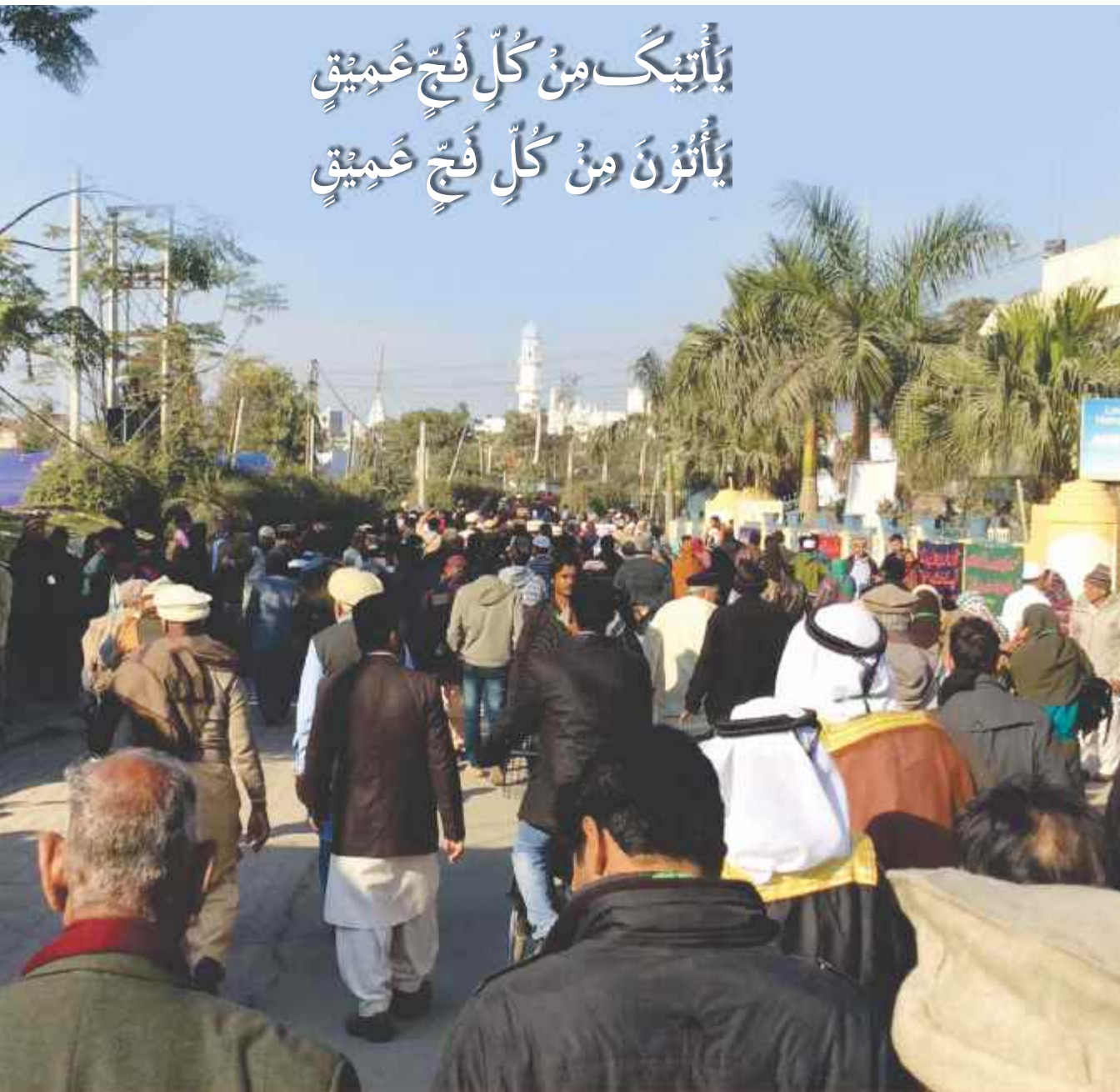
Vol : 18 Issue : 1 January | 2016